सब रनवास वैठि चहुं पासा। ससि मंडल जनु वैठ अकासा॥
बोलो सबहिं बारि कुंभलानी। करहु सिंगार देहु खड़वानी॥
कमल कली कोमल रंगभीनी। अति सुकुमार लंक की छीनी॥
चांद जेसि धन वैठि गिरासी। सहस किरन होय सुरज विकासी
तेहिके झार गहन अस गही। भइ निरंग मुख जोति न रही॥
दरब वार कुछ पुण्य करेहू। औ लै वर संन्यासहि देहू॥
भरके थार नखत गजमोती। वरती कीन्ह चांदकी जोती॥

कीन्ह अरगजा मरदन औ सुख दीन्ह नहान।
पुनि भइ चांद जो चौदस रूप गयो छिपभान॥

पटवहि चीर आन सब छोरी। सारी कंचुक पहिर पटोरी॥
फुन्दिया और कनसिया राती। छायल पिंडवाही गुजराती॥
चकवा चीर मखोना लोने। मोति लाग औ छापे सोने॥
सुरंग चीर भल सिंहलदीपी। कीन्ह जो छापा धन वह छीपी॥
पेमचा डुरया और बुंदरी। स्याम सेत पीरी औ हरी॥
सात रंग सो चित्र चितेरे। भरके दीठ जाहिं नहिं हेरे॥
चन्दनौता ओखरदुक भारी। बांस पूर झिलमिल को सारी॥

पुनि अभरन बहु काढ़ा आनो भांति जड़ाउ।
फिर फिर सब पहिरहिं जस जैस मन भाउ॥

रतनसेन गयी अपनी सभा। वैठे पाट जहां अठ खंभा॥
आय मिले चितौर के साथी। सबै विहंसके दीन्ही हाथी॥
राजाकर भल मानहु भाई। जैं हमकहं यहि भूमि दिखाई॥
जो हम कहं नहिं एत नरेसू। तब हम कहां कहां यहि देसू॥

धनि राजा तुईं राज विसेखा। जेहि की रजायसु सब कुछ देख।
भोग विलास सभी कुछ पावा। कहां जीभ तस अस्तुति आवा॥
अब तुम आय अंतरपट साजा। दरसन कहं न तपावहु राजा॥

नयन सेराने भूख गइ देख दरस तुम आज।
आज भयो अवतार नव औ सब भे नये काज॥

हंसके राज रजायसु दीन्हा। मैं दरसन कारन तप कीन्हा॥
अपनी योग लाग अस खेला। गुरु भा आप कीन्ह तुम चेला॥
अह कमोर वरषा रुत देखहु। गुरू चीन्हके योग विशेषहु॥
जो तुम तप साधा मोहिं लागी। अब जन हिये होहु वैरागी॥
जो जेहिं लाग सहै तप जोगू। सो तेहिके संग मानै भोगू॥
सोरह सहस पदमिनी मांगी। सबै दीन्ह नहिं काहु खांगी॥
सबक धौरहर सोने साजा। सब अपने अपने घर राजा॥

हस्थि घोर औ कापर सबहि दीन्ह वड़ साज।
भये ग्रहस्त सब लखपती घरघर मानहु राज॥

पदमावत सब सखी बोलाई। चीर पटोर हार पहिराई॥
सीस सबनके सेंदुर पूरा। सीस पूर सब मांग सिंदूरा॥
चंदन अगर चित्र सम भरीं। नयन चार जानहुं औतरीं॥
जानु कमलसंग फूली कुई। औ सो चांद संग तरई उई॥
धन पदमावत धन तोर नाहु। जेहि अभरन पहिरा सब काहु॥
बारह अभरन सोरह सिंगारा। तोहि सोहै पिय ससि मसयारा
ससि सुकलंकी राहुहि पूजा। तुइ निकलंक न कोइ सर दूजा॥

काहूं बीन गहाकर काहूं नाद मृदंग।
सब दिन अनन्द बधावा रहस कूद इक संग॥
पद्मावत कहि सुनहु सहेली। हौं सो कमल तुम कुमुद न बेली
कलस मानि हौं तेहि दिन आई। पूजा चलो चढ़ावहिं जाई॥
मंझ पद्मावतका जो विवानू। जनु परभात उठे रवि भानू॥
आस पास बाजत चौं डोला। दुंद मृदंग झांझ डफ ढोला॥
एक संग सब सोंधी भरी। देव दुवारे उतर भई खरी॥
अपने हाथ देव अन्हवावा। कलस सहस इक घृत्त भरावा॥
पोता मंडफ अगर औ चन्दन। देव भरा अरगज औ बिन्दन॥
कै प्रनाम आगी भई बिनय कीन्ह बहु भांति।
रानी कहा चलहु घर सखी होत है राति॥
भइ निस धन जस ससि परकसी। राजैं देखि भूमि फिर बसी॥
भइ कटकई सरद ससि आवा। फेर गगन रवि चाहौ छावा॥
सुनि धन धनुष भौंह कर फेरी। काम कटाछ मकोरत हेरी॥
जानहुं न कै बीच पै खाचौं। पिता सपत हौं आज न बाचौं॥
काल्ह न होय रहे सुख रामा। आज करौं रावन संग्रामा॥
सैन सिंगार सुहूं है सजा। गज गत चाल अंचल गत धुजा॥
नयन-समुद्र खड़्ग नासिका। सरबर जूझकी मोसौं जिता॥
हौं रानी पद्मावती मैं जीता सुख भोग।
तू सरवर कर तासौं जस जोगी तोहि जोग॥
हौं अस जोगि जान सब कोऊ। बीर शृंगार जिते मैं दोऊ॥
वहं तो हनू बीर धट माहौं। यहं तो काम कटक तुम्ह पाहौं॥

वहां तो हय चढ़की महि मंडौं। यहां तो अधर अमी रसखंडौं॥
वहां तो खड़ग नरन्दहि मारौं। यहां तो विरह तुम्हार संहारौं
वहां तो गज पेलौं होय केहर। यहां तो कुच कामिन करहे हर
वहां तो लूटौं कटक खंडारू। यहां तो जीत तुम्हार सिंगारू॥
वहां तो कुम्भस्थल गजनाजं। यहां तो गज कलसहि कर लाजं

पड़ा बीच तब घर घर प्रेम राज कै टेक।
मानौ भोग चहू ऋतु मिल दोनौं होय एक॥

छः ऋतुखण्ड।

प्रथम वसन्त नवल रुत आई। सुरुत चैत वैसाख सुहाई॥
चंदन चीर पहिर धन अंगा। सेंदुर दीन्ह बेहंसि भर मंगा॥
कुसुम हार औ परबल बासू। मलयागिरि छिड़का कीलासू॥
सूर सपेतो फूलन दासी। धन औ कंतमिले सुखवासी॥
पिय संयोग धन यौवन वारी। भंवर पुहुप संग करहिं धमारी॥
होय फाग भल चांचर जोरी। विरह जराय दीन्ह जस होरी॥
धनससि सीर तपी पिय सूरू। नखत सिंगार होहिं सब चूरू॥

जेहि घर कंता रुत भली आव वसंता नित्त।
सुखभर आवहिं देवहरे दुःख न जानै कित्त॥

रुत ग्रीषम कौ तपन नहिं तहां। जेठ असाढ़ कंत घर जहां॥
पहिरे सुरंग चीर धन झीना। परमल मेदरहो तन भीना॥

पद्मावत तन सीर सुवासा। नैहर राज कंत घर पासा॥
औ बड़ जूड़ तहां सोनारा। अगर पोत सुख नंत उहारा॥
सेत बिछावन सूर सपेती। भोग बिलास करहि सुखसेती॥
अधर तंबोर कपुर भिउसेना। चंदन चरच लाव नितवैना॥
भा अनंद सिंहल सब कहूं। भागवंत कहं सुख रुत छहूं॥

दाड़िम दाख लेहि रस बरसहिं आंब छुहार।
हरियर तन सुअटा कर जो अस चाखन हार॥

रुत पावस बरसे पिव पावा। सावन भादौं अधिक सुहावा॥
पद्मावत चाहत रुत पाई। गगन सुहावन भूमि सुहाई॥
कोकिल बैन पांत बग छूठी। धन निसरी जनु बीर बहूटी॥
चमक बीज बरसे जल सोना। दादुर मोर सबद सुठ लोना॥
रंग राती पिय संगनिस जागी। गरजे गगन चौंक कंठलागी॥
सीतल बूंद ऊंच चौबारा। हरियर सब देखे संसारा॥
मलय समीर बास सुखवासी। बेल फूल सेजरि सुख दासी॥
हरियर भूमि कसूंभी चोला। औ धन पिय संग रचो हिंडोला॥

पवन झकोरे है हरष लागी सीतलवास।
धन जानी हिर पवनहै पवन सो अपने पास॥

आय सरद रुत अधिक पियारी। नाउं कुवार कातिक उजियारी
पद्मावत भइ पूनो कला। चौदह चांद उई सिंहला॥
सोरह किरन सिंगार बनावा। नखत भरा सूरज ससि पावा॥
भा निरमल सब धरति अकासू। सेज संवार कीन्ह बल दासू॥
खेत बिछावन औ उजियारी। हंस हंस मिलहिं पुरुष औ नारी

सोने फूलहिं पृथवी फूली। पिय धनसों धन पिय सों भूली॥
चष अंजन दै खंजन दिखावा। होय सारस जोरी रसपावा॥

यहि रुत कन्या पास जेहि सुखतिनके हियमांह।
धन हंस लागी पियगले धनगल पियके बांह॥

आय सिसिर रुत तहां नसोज। अगहन पूस जहां घर पौज॥
धन औ पिय महं सीव सुहागा। दुहूं अंग एकै मिललागा॥
मन सो मन तन सो तन गहा। हिय सो हिय बिच हार न रहा॥
जानहुं चन्दन लाग्यो अंगा। चन्दन रहै न पावै संगा॥
भोग करहिं सुख राजा रानी। वहं लेखि सब सृष्टि जुड़ानी॥
जूहं दुहुं यौवन सों लागा। बिचहुत सीव जीव लै भागा॥
दुइ घट मिल एकै ह्वै जाहीं। ऐसि मिलहिं तबहीं न अघाहीं॥

हंसा कैल करहिं ज्यों सरवर कंद नहि होउ।
सेव पुकारे पारभा जस चकवीक बिछोउ॥

रुत हेमन्त संग पियो पियाला। मानहुं फागुन सुख सेवसाला॥
सूर सपेती महं दिन राती। दगल चीर पहिरहिं बहु भांती॥
घर घर सिंहल ह्वै सुख भोजू। रहा न कतहुं दुखकर खोजू॥
जहं धन पुरुष सीत नहिं लागा। जानहुं काग देख सर भागा॥
जाय इन्द्र सों कीन्ह पुकारा। हौं पद्मावत देस निसारा॥
यहि रुत सदासंग मैं सोवा। अब दरसनते भरा बिछोवा॥
अब हंसके ससि सूरह भेटा। अहा जो सीत बीचहुत मेटा॥

भयो इंद्रकर कायसु परसै हवहिं भद्र सोय।
काहु कांहुकी पीरमा कोहि काहुकी होय॥

नागमती चितौर पंथ हेरा। पिय जोगी पुनि कीन्ह नफेरा॥
नागर नारि काहु बस परा। तें विमोह मोसों चित हरा॥
सुआ काल होय लेगा पीव। पीव न जात जात पर जीव॥
भयो नरायन बावन किरा। राज करत नलराजा छरा॥
करन बान लीन्हीं कै छंदू। भरथहिं भयो भिलमिला नंदू॥
मानत भोग गोपिचंद भोगी। लै अपसवां जलंधर जोगी॥
ले के कंथ भा कुबरा लोपी। कठिन बिछोह जियहि किमि गोपी

सारस जोरी किनहरी मार गयो किन खाग।
भुर भुर मांजर धन भई बिरह की लागी आग॥

पिय वियोग अस बावर जीव। पपिहा जस बोलै पिव पीव॥
अधिक काम दगधे सो कामा। हरि लै सुआ गयो पिय नामा॥
बिरह बान तस लाग न डोली। रकत पसीज भीज तन चोली॥
संगही हीरहार हिय वारी। हर हर प्रान तजौ अब नारी॥
खन दूक आव पेट महं स्वासा। खनहि जाय जिव होय निरासा
पवन डुलावहिं सींचहिं चोला। फिरके नारि समुभ मुख बोला॥
प्रान पयान होत को राखा। कोयल औ चातक मुख भाखा॥

आह जो मारी बिरहकी आग उठी तेहि लाग।
हंस जो रहा सरीर महं पांख जरे तब भाग॥

पाट महादेव हिये निहारू। समभ जीव चित चेत संभारू॥
भंवर कमल संग होय मिलावा। संवरनेह मालति पुनि आवा॥
जैसो पपीहा स्वातिहि प्रीती। टेक प्यास बांधे जिय सेती॥
धरती जेसि गगन सो नेहा। पलट फिरै बर्षा रुत मेहा॥

पुनि वसन्त रुत आव नवेली। सुर रस मधुकर सारस वेली॥
जन अस जीव करेसि तुबारी। वह तरवर पुनि उठहिं संवारी॥
दिन दस बिन जल सूखा कांसा। पुनि सोइ सरवर सोइ हांसा॥

मिलहिं जो बिछुड़े साजन कैको भेंट कहन्त।
तपन मिरगसर जिनिसहें ते अट्रापलहन्त॥

चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा। साजा विरह दुंदहल बाजा॥
धूमस्याम धौरी घन धायी। स्वेतध्वजा बक पांति दिखायी॥
खड्ग बीज चमकी चहुं ओरा। बूंदबान बरसहिं घनघोरा॥
उनई घटा आय चहुं फेरी। कंत उबार मदन हौं घेरी॥
दादुर मोर कोकिला पीउ। गिरहि बीज घट रहै न जीउ॥
पुष्य नखत सिर ऊपर आवा। हौं बिन नाह मंदिरको छावा॥
अट्रा लाग बीज भुंइ लेई। मो पिय बिनको आदर देई॥

जेहिं घर कंताते सुखी तेहि गारू तेहि गर्व।
कंत पियारे बाहरे हम सुख भूला सर्व॥

सावन बरस मेह अतवानी। मरन परी हौं विरह भ्ररानी॥
लाग पुनरबसु पीउ न दिखा। भइ बावर कहं कंत सरेखा॥
रकत को आंसु परहिं भुइं टूठी। रेंग चलें जनु बीर बहूटी॥
सखिन रचा पियसंग हिंडोला। हरियर भूमि कुसुम्भी चोला॥
हिय हिंडोल जस डोले मोरा। विरह झुलावै देइ झकोरा॥
बाट असूझ अथाह गंभीरी। जिवबावर भा फिरै भंभीरी॥
जगजल बूड़ जहां लग ताको। मोरे नाव खिवक बिन थाको॥

पर्वत समुद अगम बन औ बीहड़ घन ढंख।
किमकर भेटूं कन्ततुम नामो पांव न पंख॥
भरि भादों दुपहर अति भारी। कै सें भरों रयनि अंधियारी॥
मंदिर सून पिय अन्तहि बसा। सेज नाग भई दहि दहि डसा॥
रहौं अकेल गहें इक पाटी। नयन पसार मरों हियफाटी॥
चमक बीज घन गरजत वासा। बिरह काल होय जीव निरासा॥
बरसे मघा झकोर झकोरी। मोर दुइ नयन चुवें जों घोरी॥
धन सूखे भर भादो माहां। अबहुं न आय नसौंचसि नाहां॥
पुरवा लाग भूमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी॥
जलथल भरे अपूर सब धरति गगन मिल एक।
धन जोबन अवगाह महं वय बूड़ी पिय टेक॥
लाग कुंवार नीर जस घटा। अबहुं आवरे प्रीतम लुटा।
तुहि देखों पिय पलहे कया। उतरा चीत बहुर कर मया॥
उये अगस्त हस्त तन गाजा। तुरी पलान चढ़े रन राजा॥
चित्रा मीत मीन घर आवा। कोकिल पीव पुकारत पावा॥
स्वाति बूंद चातक मुखपरी। सीप समुद्र मोति वह्न भरी॥
सरवर संवरि हंस चलि आये। सारस कुरलें खंजन देखाये॥
भई निरास कास बन फूले। कन्त न फिरे विदेशहि भूले॥
बिरह हस्थि तन साले घाय करे नितचूर।
घाय बचाओ वेग पिय गाजहु होय सेंदूर॥
कातिक सरद चन्द उजियारा। जग सीतल मो बिरहिन जारा॥
चौदह किरन चन्द परकासू। जनहु जरे सब धरति अकासू॥

तन मन सेज करैं इकदाहू। सब कहं चन्द भयो मोहिं राहू ॥
चहूं खंड लागै अंधियारा। जो घर नाहीं कन्त पियारा ॥
अबहूं निठुर आव यहि वारा। पर्ब दिवारी हो संसारा ॥
संग झुमक गावहिं अंग मोरी। हौं झुरवौं बिछुरी जेहि जोरी ॥
जेहि घर पियसो मनोरथ पूजा। मो कहं बिरह सौत दुख दूजा

सखिमानैं त्यौहार सब गाय दिवारी खेल।
हौं काखिलौं कन्त बिन रही छार सिर मेल ॥

अगहन दिवस घटा निस बाढ़ी। दुपहर रयनि जाय किमि गाढ़ी
अब धन दिवस बिरह भा राती। जरौं बिरह जस दीपक बाती ॥
कांपा हिया जनावा सीऊ। तो पै जाय होय संग पीऊ ॥
घर घर चीर रचे सब काहू। मोर रूप सब लेगा नाहू ॥
पलट न बहुरा गा जो बिछोई। अबहूं फिरे फिरे रंग सोई ॥
बज्रांगिन बिरहिन हिय जारा। सुलग सुलग दग्धे भइ छारा ॥
यह दुख दग्ध न जानै कंतू। योवन जनम करे भसमंतू ॥

पियसों कहो संदेसरा ये भंवरा ये काग।
सो धन बिरहिन जरगई तेहिक धुवांहमलाग ॥

पूस जाड़ थर थर तन कांपा। सूरज जुड़ाय लंक दिस तापा ॥
बिरह बाढ़भा दारुन सीऊ। कंप कंप मरौं लेइ हर जीऊ ॥
कंत कहां हो लागों हियरे। पन्थ अपार सूझ नहिं नियरे ॥
सूर सपेती आवै जूड़ी। जानहु सेज हिमचल बूड़ी ॥
चकई निस बिछुड़े दिन मिला। हौं दिनरात बिरहं-कोकिला ॥

रयनि अकेल साथ नहिं सखी। कैसे जिये बिछोही पखी॥
बिरह सुचान भयो तन जाड़ा। जियत खाय औ मुयेहि न छांड़ा

रकत दुरा मांसू गिरा हाड़ भये सब संख।
धन सारस होइ ररमुई आयस मेटहिं पंख॥

लाग्यो माघ परै अति पाला। बिरहा काल भयो जड़ काला॥
पहल पहल तनरुई जो झांपी। अहल अहल अधिको हिय कांपै
आय सूर ह्वै पतरे नाहा। तुहि बिन जाड़ न छूटै माहा॥
यही माह उपजो रस मूलू। तो सुभंवर मोर जोवन फूलू॥
नयन चुवहिं जस महवट नीरू। तेहि बिन आग लाग सिर चीरू
टपटप बूंद परहिं जनु ओला। बिरह पवन ह्वै मारे झोला॥
केहिक सिंगार कोपहिर पटोरा। ग्रीव न हार रहे ह्वै डोरा॥

तुम बिन कन्ता धन झुरी ठन ठन वर भा डोल।
तेहिपर बिरह जरायके चहै उड़ावा झोल॥

फागुन पवन झकोरे महा। चौगुन सीव जाय नहिं सहा॥
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झकझोरा॥
तरवर झरहिं झरहिं लन ढांखा। भई उपन्त फूर फरसाखा॥
करहिं बनाफत कीन्ह हुलासू। मोकहं जग भा दून उदासू॥
फाग करहिं सब चांचर जोरी। मोतन लाय दीन्ह जस होरी॥
जो पै पियै जरत अस भावा। जरत मरत मोहिं रोस न आवा॥
रात दिवस निरभ जिय मोरें। लग्यौं निहार कन्त जो तोरें॥

यह तन जारौं छार कै कहौं कि पवन उड़ाव।
मग तेहि मारग ह्वै परैं कन्त धरै जहं पाव॥

चैत वसन्ता होयं धमारी। मो लेखि संसार उजारी॥
पंचम विरह पञ्च सर मारी। रकत रोय सगरे बन ढारी॥
बूड़ उठे सब तरवर पाता। भीज मजीठ टेसु बन राता॥
बौरे अम्ब फरे अब लागी। अबहुं संवरि घर आव सभागी॥
सहस भाव फूली बन पती। मधुकर फिरें संवरि मालती॥
मो कहं फूल भये सब कांटे। दीठिहरी जनु लागहिं चांटे॥
भर जोवन भइ नारंग साखा। सो अब विरह तात है चाखा॥

घर न परेवा आव जस आय परो पिय टूट।
नारि परायी हाथ है तुम बिन पांव न छूट॥

भा बैसाख तपन अति लागी। चोला चीर चंदन भा आगी॥
सूरज जरत हिमंचल ताका। विरह विजाग सौंह रथ हांका॥
जरत बजागि होय पिय छाहां। आय बुझाव अंगारहिं माहां॥
तोहि दरसन है सीतल नारी। आय आग सो कर फुलवारी॥
लागी जरे जरे जस भारू। फिर फिर भूजे सितध्यों न वारू॥
सरवर हिया घटत नित जाई। तरक तरक है है भर आई॥
वेहिरत हिया करहु पिय टेका। दीठि मया करमिल वहु एका

कमल जो विकसत मानसर बिन जल गयो सुखाय।
अबहुं वेल फिर पलवे जो पिय सींचहु आय॥

जेठ जरों जग भुनहि लुवारा। उठहिं बौंडरा परहिं अंगारा॥
बिरह गाज हनुमत है जागा। लंका दाह करे तन लागा॥
चारी पवनं झंकोरें आगी। लंका दाह पलंका लागी॥
दह भइ स्याम नदी कालिन्दी। विरहकी आंग कठिन अस मुन्दी

उठै आग औ आवै आंधी। नयनँ न सूझ भरीं दुख बांधी॥
अधजर भई मांस तन सूखा। लाग्यो बिरह काल है भूखा॥
मांस खाय अब हाड़हि लागा। अबहूं आव आवत सुनि भागा॥

गिरि समुद्र ससि मेघ रवि सहि न सकैं यह आग।
मुहमद सती सराही जरै जो अस पिय लाग॥

तपै लाग अब जेठ असाढ़ी। भइमो कहं यहि छाजन गाढ़ी॥
तन तन बर भा झूरौं खरी। भा वर्षा दुख आगर जरी॥
बंध नाहिं औ खंड न कोई। नाग न आव कहौं कहि रोई॥
सांठ नांठ लग बात को पूछा। बिन जिय फिरै मूंज तन छूछा॥
भई दुहेली टेक बहूनी। थांभ नाह उठ सके न थूनी॥
बरषहिं मेह चुवहिं नयनाहा। छपर छपर होई बिन नाहा॥
कोरी कहां ठाठ नव साजा। तुम बिन कंत न छाज न छाजा॥

अबहूं दीठि मया कर नाथ निठुर घर आव।
मंदिर उजाड़ होत है नवकै आय बसाव॥

रोय गंगाई बारह मासा। सहस सहस दुख इक इक सांसा॥
तिल तिल बरस बरस पर जाई। पहर पहर जुग जुग नसराई॥
सौंह आव पिय रूप मुरारी। जासों पाव सुहाग सुनारी॥
सांझ भई झुर झुर पंथ हेरी। कौन सो घरी करी पिय फेरी॥
दहि कुइला भई कन्त सनेहा। तोला मांस रहा नहिं देहा॥
रकत न रहा बिरह तन गिरा। रती रती है नयनहिं ढुरा॥
पांय लगी जोरै धन हाथा। जोरा नेह जोराधी नाथा॥

बरस दिवस धन रोयके हारपरी चित झंख।
मानुष घर घर बूझके पूंछी निसरी पंख॥
भई पुंछार लीन्ह बन वासू। वैरिन सौत दीन्ह चिलवासू॥
होौं खरि बान विरह तन लागा। जो अबहूं आवै घर कागा॥
हारल भई पंथ में सेवा। अब तुहि पठवों कौन परेवा॥
धौरौ पांडुक कहि पिय ठाऊं। जो चितरोख न दूसर नाऊं॥
जाय विवाहो पिय कंठ लुवा। करै मिलाव सोई गौरवा॥
कोकिल भई पुकारत रही। महर पुकार लीन्ह ले दही॥
पेड़तिलोरी औ जल हंसा। हिरदय बैठि बिरह लग नंसा॥
जेहि पंखी के नेर होय कहै विरह की बात।
सोई पंख जर तरवर जाय होय नहिं पात॥
कुहक कुहक जस कोयल रोई। रकत आंसु घुघची बन बोई॥
भइ कर मुखी नयन तन राती। को सिराव विरहा दुख ताती॥
जहं जहं ठाढ़ होय बनवासी। तहं तहं होइ घुंघचिन्ह की रासी
बूंद बूंद महं जानो जीव। गूंजा गूंज करहिं पिय पीव॥
तेहि दुख भई पलास निपाती। लोहू बूड़ उठी होय राती॥
राती बिम्ब भयी तेहि लोहूं। परवर पाक फटे हिय गोहू॥
देखों जहां सोइ है राता। जहं सो रतन कहै को बाता॥
नापावस वह देसरा नहिं हेवंत न वसन्त।
ना कोकिल न पपीहरा जेहि सुनि आवेंकन्त॥
फिरि फिरि रोय कोई नहिं डोला। आधीरात विहंगम बोला॥
तुइ फिर फिर दाहे सब पांखी। केहि गुन रयनि नलावेसिआंखी

नागमती केहि कारन रोई। कासों कहूं जो कन्त बिछोई ॥
मन चित हिये न उतरे भोरे। नयन कजल चख रहे न मोरे ॥
कोइ न जाय तेहि सिंहल दीपा। जेहि स्वातीके नयना सीपा ॥
जोगी होय निसरा सो नाहू। तबहु न कहा संदेस न काहू ॥
नित पूछों सब जोगी जंगम। कहे न कोइ निज बात बिहंगम ॥

चारो चक्र उजार भये सकल संदेसा टेक।
कहों बिरह दुख आपन बैठ सुनहु दंड एक ॥

तासों दुख कहिये हो बीरा। जेहि सुनके लागै पर पीरा ॥
को होय भिम दिनको ले रहा। को सिंहल पहुंचावै चहा ॥
जहां सो कन्त गये होय जोगी। हों किंगरी भइ झूर बियोगी ॥
वह सुनके पूरो कर भेटा। हों भइ भस्म न आय समेटा ॥
कथा जो कहे आय पियकेरी। पांवर होउं जनम भर चेरी ॥
वहके गुन संवरत भइ माला। अबहूं न बहुरा उड़गा छाला ॥
बिरह गुरुइ खप्पर कै हिया। पवन अधार रहे सो जिया ॥

हाड़ भई भुर किंगरी नसें भईं सब तांति।
रोम रोम तन धुन उठे कहो बिथा तेहि भांति ॥

पदमावत सो कहो बिहंगम। कन्त लुभाय रहे जेहि संगम।
तू घर घरन भई पिउ हरता। मोतन जप दीन्हो औ बरता ॥
रावन कनक सो तो कहं भयो। रावट लंक मोहिं कै कियो ॥
तो कहं चैन सुख मिले सरीरा। मो कहं हिये दंद दुख पीरा ॥
हमहूं व्याह तोर संग पीऊ। आपहि पाय जान पर जीऊ ॥

आवहुं कर माथा जिव फेरो। मोहिं जियाव देहु पिय मेरो॥
मोहिं भोग सों काज न प्यारी। सौंह दीठि की चाहन हारी॥

सौत न होस तू वैरिन मोर कन्त जेहि हाथ।
आन मिलाव एक वेर कैसे तोर पांय मोर माथ॥

रतनसेन की मा सरस्वती। गोपिचन्द जस मैनावती॥
अंधरी बूढ़ी सुठ दुख रोवा। जोवन रतन कहां होय खोवा॥
जोवन अहा लीन्ह सो काढ़ी। भइ बिन टेक करे को ठाढ़ी॥
बिनं जोवन भइ आस पराई। कहां सुपूतखम्भ होय आई।
नयन दीठि नहिं दिया वराहीं। घर अंधियार पूत जो नाहीं॥
कोरी चला स्रवन की ठाऊं। टेक देह वह टेकौं पाऊं॥
तुम सरवन हे कांवर सजी। हार लाय सो काहे बजी॥

स्रवन स्रवनकी सरमुई माता कांवर लाग।
तुम बिन पानि न पावें दसरथ लावै आग॥

लै सुसंदेस विहंगम चला। उठी आग सगरी सिंहला॥
विरह विजाग बीज को ठेगा। धूंभ सो उठी स्याम भये मेघा॥
भरिगा गगन लूक तस छूटी। हू सो नखत गिरहिं भुइं टूटी॥
जहं जहं भूमि जरी भा रेहू। बिरह कि दगध भई जनु खेहू॥
राहु केत जस लंकाजरी। औ उड़ चिनग चांद महं परी॥
जाय विहंगम समुद डफारा। जरे मच्छ पानी भा खारा॥
दाही बन बीहड़ जल सीपा। जाय नेरे भा सिंहल दीपा॥

समुदतीर इक तरवर जाय बैठ तेहि रूख।
जबलग कहि न संदेसा तबलग प्यास न भूख॥

रतनसेन बन करत अहेरा। कीन्ह वही तरवर तरि फेरा॥
सीतल वृक्ष समुद्र के तीरा। अति उतंग औ छांह गंभीरा॥
तुरी बांधिके बैठि अकेला। साथी और करहिं सब केला॥
देखत फिरै सो तरवर साखा। लाग सुनै पंखिनकी भाखा॥
पंखिनमहं जो विहंगम अहा। नागमती जासों दुख कहा॥
पूंछहिं सवै विहंगम नामा। अहो मीत काहे तुम स्यामा॥
कहेसि मीत मासिक दुइ भयी। जम्बूदीप तहां हम गयी॥

नगर एक हम देखा गढ़ चितौर वह नाउं।
सो दुख कहूं कहां लग हम डाढ़े तेहि ठाउं॥

जोगी है निसरा सो राजा। सून नगर जानहु धुन्द बाजा॥
नागमती है ताकर रानी। जरै विरह जस कोयल बानी॥
अवलग जरभइ होय है छारा। कही न जाय विरह की झारा
हिया फाट वह जबहीं कूहकै। पर आंसु सब होय होय लूकै॥
चहुं खंड छिटकी वह आगी। धरती जरत गगन कहं लागी॥
विरह दवान को जरत बुझावा। चही लाग सो हेरें धावा॥
हौं पुनि तहां सो दाढ़े लागा। तन भा स्याम जीव लै भागा॥

का तुम हंसो गरब के करहु समुदमहं केल।
मति अन्ह विरही वस परहिं दही अगिन जल मेल॥

सुनि चितौर राजैं मन गुना। विधि संदेस मैं कासों सुना॥
को तरवर पर पंखी वेसा। नागमती कर कहै संदेसा॥
को तु मीत मन चैत बसेरू। देव कि दानव पवन पखेरू॥
रुद्र ब्रह्म सिव वाचा तोहीं। सो निज बात अन्त कहु मोहीं॥

कही सो नागमती तुइ देखी। कहेसि विरह जस मरौं विसेखी॥
हौं राजा सोई भा जोगी। जेहि कारन वह ऐस वियोगी॥
जस तू पंखी हौं दिन भरौं। चाहौं कबहिं जाय उड़ परौं॥

पलक आंख तेहि मारग लागी दुनऊ रहाहिं।
कोउ न संदेसी आवहिं तेहिक संदेस कहाहिं॥

पूंछहि कहा संदेस वियोगू। जोगी भया न जानहि भोगू॥
धरनी संग न संगी पूरे। पानी बूड़ रात दिन भूरे॥
तेलि वैल जस बायें फिरे। परे भंवरमहं सौंह न टरे॥
तुरी नाउं दाहिन रथ हांका। बायें फिरे कुमहारका चाका॥
तुहि अस नाहिं जो पंख भुलाना। उड़े सो आव जगतमहं जाना
एक दीप का आयों तोरे। सब संसार पांयतर मोरे॥
दहने फिरे सो अस उजियारा। जस जग चांद सुरज औतारा॥

मुहमद बायें दिस तजी एक स्रवन इक आंख।
जब ते दाहिन होय मिला बोल पपीहा पांख॥

हौं ध्रुव अचल सो दाहिन लावा। फिर सुमेरु चितौरगढ़ आवा॥
देखौं तोरे मंदिर घमोई। मात तोर आंधर भइ रोई॥
जस सरवन बिन अंधी अंधा। तस ररमुई तोहिं चितबंधा॥
कहेसि मरौं को कांवर लेइ। पूत नाहिं पानी को देइ॥
गई पियास लाग तुहि साथा। पानी दिह दसरथ के हाथा॥
पानी न पिये आग पै चाहा। तोहि अस पूत जनम अस लाहा॥
भागीरथी होइ कर फेरा। जाय संवारि मरन की वेरा॥

तू सपूत मन ताकर अस परदेस न लेहि।
अबताईं मुद होय ही मुयहिं जाय गत देहि॥
नागमती दुख विरह अपारा। धरती सरग जरे तेहिं झारा॥
नगर कोट घर बाहेर सूना। न्योज होय घर पुरुष बहूना॥
तू कामरू परा वस टोना। भूला योग छरा तोहि टोना॥
वह तुहि कारन मर भइ मारा। रही नाक होय पवन अधारा॥
कहुं बोलहिं लें मोकहं खाहू। मांस न काया जो रुच काहू॥
विरह मयूर नाग वह नारी। तू मंजार कर वेग गुहारी॥
मांस गिरा मांजर ह्वै परी। जोगी अबहुं पहुंच ले जरी॥
देख विरह दुख ताकर मैं सो तजा वनवास।
आयों भाग समुदमहं तोह न छांड़े पास॥
अस पुनि जरा विरह कर गठा। मेघ स्याम भयि धूम जो उठा॥
दाढ़ा राहु केतु गा दाधा। सूरज जरा चांद जर आधा॥
औ सब नखत तराईं जरीं। टूटहिं लूक धरतिमहं परीं॥
जरे सो धरती ठावहिं ठाऊं। दहक पलास जरे तेहिं दाऊं॥
विरह स्वासतस निकसो झारा। दहि दहि परबत होहिं अंगारा
भंवर पतंग जरे औ नागा। कोकिल भुजयल औ बन कागा॥
बन पंखी सब जिव ले उड़े। जल पंखी जलमहं दुख बुड़े॥
हमहुं जरत तहं निकसा समुद बुझायों आय।
समुद जरा पानी भा खारा धूमरहा जगछाय॥
राजें कहा रे सरग संदेसी। उतर आव मोहिं मिल परदेसी॥
पांय टेक तहिं लावों हियरे। परन संदेस कहो ह्वै नियरे॥

कहा विहंगम जो बनबासी। कितक गहीते होहि उदासी॥
जेहि तस तरि तुम आसन कीजा। कोकिल काग बराबर दीजा॥
धरतीमहं विष चारा परा। हारल जानि भूमि परिहरा॥
फिरौं वियोगी डारहि डारा। करौं चलै कहं पंख संवारा॥
जहवां घरी घटत नित जाहीं। सांझ जीव है दिवसहि नाहीं॥

जो लहि फेरै मुकत है परों न पिंजरमाह।
जाउं वेगथल आपने है जेहि बीच निबाह॥

कहि संदेस विहंगम चला। आग लाय सगरे सिंहला।
घड़ी बीत राजा वर आवा। भा अलोप पुनि दीठि न आवा॥
पंखी नाउं न देखा पांख। राजा रोय फिराके साखू॥
जस हेरत वह पंख हेराना। दिन कहमहिं अस करब पयाना॥
जो लहि प्रानपिण्ड टूक ठाऊं। एकबार चितोरगढ़ जाऊं॥
आवा भंवर मंदिर जहं केवा। जीव साथ ले गयो परेवा॥
तन सिंहल मन चितोर बसा। जिव बिसभर नागिन जिम डसा॥

जेत नारि हंसपूंछी अमी वचन जिमि निन्त।
रस उतरा विष चढ़ रहा ना वह चिंतन मिन्त॥

वरस एक तहं सिंहल रही। भोग विलास कीन्ह जस चही॥
भा उदास जो सुना संदेसू। संवरि चला मन चितोर देसू॥
कमल उदासी देखा भंवरा। थिर न रही मालती मन संवरा॥
जोगी औ मन पवन पराहा। क्षित थिर रहै जो चित्त उचाहा॥
जो जिव काढ़दे आवन कोई। जोगी भंवर न आपन होई॥

चला कमल मालति हिय घाली। अब कित थिर आछी अल आली
गन्धर्वसेन आय सुनि बारा। कस जिव भयो उदास तुम्हारा॥

मैं तुमहीं जिव लावा दीन नयन महं बास।
जो तुम होहु उदासी यहिक्रा कर कैलास॥

रतनसेन बिनवा कर जोरी। अस्तुति जोग जीभि ना मोरी॥
सहस जीभ जो होहिं गुसाईं। कौन जाय अस्तुति जहं ताईं॥
कांचकिरा तुम कंचन कीन्हा। तब भा रतन ज्योति तुम्ह दीन्हा
गंग जो निरमल नीर कुलीना। नारमिले जल होय मलीना॥
तसहीं अहा मलीनी कला। मिला आय तुम भा निरमला॥
पान समुद्र मिला होय सोती। पापहरा निरमल भइ ज्योती॥
तुम मन आवा सिंहल पुरी। तुमते चढ़ा राज औ कुरी॥

सात समुद तुम राजा सरन पांव कोउ खाट।
सबै आय शिर नावहिं जहां तुम्हारा पाट॥

औ मो विनय अब करों गुसाईं। तबलग काया जीव तबताईं॥
आवा आज हमार परेवा। पाती दीन्ह आन पति सेवा॥
राज काज औ भुइं उपराहीं। सत्रू भाई सम कोउ नाहीं॥
आपन आपन करहिं सुलीका। एकहि मार एक चहि टीका॥
भई आमावस नखतहि राजू। हमकहं चन्द चला वह आजू॥
राज हमार जहां चलि आवा। लिख पठई अब होय परावा॥
वहां नेर देहली सुलतानू। होय हैं भोर उठै जो भानू॥

रहहु अमर महि गगन लग औ जो लह हम आव।
सीस हमारा तहां नित जहां तुम्हारा पांव॥

राज सभा पुनि उठी संवारी। अन विनती राखी पत भारी॥
भाइन मांझ होय जन फूटी। घरकी भेद लंक अस टूटी॥
बिरवा लाय न सूखन दीजे। पावै पान दीठि सो कीजे॥
अन राखा तुम दीपक लेसी। पै न रहे पाहुन परदेसी॥
जाकर राज जहां चलि आवा। वही देस पै ता कहं भावा॥
हम दोउ नयन घालके राखहिं। ऐस भाख यहि जीभ न भाखहिं
दिवस देहु सें कुसल सिधावहिं। दीरघ आयु होय पुनि आवहिं॥

सबहिं बिचार परा अस भा गवने कर साज।
सिद्ध गनेस मनावहिं विधि पुरवे मन काज॥

विनय करे पदमावत बारी। हों पिय कमल सों गोद नेवारी॥
मोहिं अस कहां सो मालति वेली। कदम सेवती चंप चंबेली॥
औ सिंगारहार जस तागा। पुहुप कली अस हिरदय लागा॥
हौं सुवसन्त करों नित पूजा। कुसुम गुलाल सुदरसन गूजा॥
बकचन बिनवों रोस विमोही। सुनि बकाव तज जाही जूही॥
नागेसर जो मन है तोरी। पूज न सकी बोल सर मोरी॥
हों सदबरग लीन्ह में सरना। आगें कर जो कन्त तुहि करना॥

केते नारि समुझावे भंवर न काट वेध।
कहै मरों पै चितवर यज्ञ करों अवसमेध॥

गवन चार पदमावत सुना। उठाधसक जिव औ सिर धुना॥
गहबर आयं नयन भर आंसू छांड़ब यहि सिंहल कीलासू॥
छांड़यो नैहर चल्यों बिछोई। यहरे दिवस होहूं तहं रोई॥
छाड़ौं आपन सखी सहेली। दूर गवन तज चल्यों अकेली॥

जहां न रहन भयो निज चालू। होतहि कसन तहां भा कालू॥
नैहर आय काहि सुख देखा। जनु है गयो स्वपन कर लेखा॥
राखत पार सो पिता निछोहा। कित विवाहकै दीन्ह बिछोहा॥

हिये आय दुख बाजा जिव जानहु गा छैक।
मन तेवान कै रोवै हर मंडार कर टेक॥

पुनि पदमावत सखी बुलाई। सुनिकै गवन मिलौं सब आई॥
मिलहु सखी हम तहंवां जाहीं। जहां जाय पुनि आवन नाहीं॥
सात समुद्र पार वह देसू। कितरे मिलन कित आव संदेसू॥
अगम पंथ परदेस सिधारी। न जनौ कुसल कि विथा हमारी॥
पितौ निछोह कीन्ह हिय माहां। तहं को हम राखे गहि बाहां
हम तुम एक मिले संग खेला। अन्त बिछोह आन गैयं मेला॥
तुम असहितू संगात पियारा। जियत जीव नहिं करौं निरारा॥

कन्त चलाई का करौं आयसु जाय न मेट।
पुनि हम मिलहिं किना मिलें लेहु सहेली भेट॥

धन रोवत रोईं सब सखी। हम तुम देख आप कहं भखी॥
तुम ऐसो जहं रही न पाहीं। पुनि हम काहि जो आहि पराहीं
आहि पिता जो रहा हमारा। वहूं न यहि दिन हिये विचारा॥
छोह न कीन्ह निछोहा ओहूं। काहम दोष लगाइक गोहूं॥
भकु गोहूंकर हिया चराना। पै सो पिता न हिये छोहाना
औ हम देखा सखी सरेखि। यहि नैहर पाहुन कर लेखि॥
तब तेहि पिय नैहर ना चाहा। जेहि ससुरार अधिक होयलाहा

चालन कहँ हम अवतरी चलन सिखा तहँ आय।
अब सो चलन चलावै को राखै गहि पाय॥
तुम बारी पिय भोजक राजा। गर्ब क्रोध वोही पै छाजा॥
सब फल फूल वही की साखा। चहै सो तोड़ै चहै सो राखा॥
आयसु लहै रहौ नित छाया। सेवा करहु लाय भुंइ माथा॥
वर पीपर सिर ऊभ जो कीन्हा। पाकर तिन सूखी फर दीन्हा॥
बंवूर बौड़ सीस भुंइ लावा। बड़फल सुफर वही पै पावा॥
आंव जो फर कै नवै तराहीं। तव अमरित भा सब उपराहीं॥
सोइ पियारी पियहिं पिरीति। रहै जो आयसु सेवा जीती॥
पोथीकाढ़ गवन दिन देखै कौनै दिन है चाल।
दिसासूल औ बक्र योगिनी सौंह न चलिये काल॥
आदित सुक पच्छिम दिस राहू। बीफै दखिन लंक दिस दाहू॥
सोम सनीचर पुरुब न चालू। मंगर बुद्ध उतर दिस कालू॥
आवस चला चहै जो कोई। औषधि कहूं रोग नहिं होई॥
मंगल चलत मेल मुख धनियां। चलै सोम देखै दरपनियां॥
सूकहिं चलत मेल मुख राई। बीफै चलै दखिन गुड़ खाई॥
अदित तंबोल मेल मुखमुंडी। बायबरंग सनीचर खंडी॥
बुधदधि किये चलहु भोजना। औषधि यहि न आन खोजना॥
अब सुनि चक्र जोगिनी ते भुइं थिर न रहाहिं।
तीसो दिन स चन्द्रमा आठो दिसा फिराहिं॥
बारह उनइस चार सताइस। जोगिन पच्छिम दिसा गिनाइस॥
नौ सोरह चौविस औ एका। पूरब दखिन कोन तेहि टेका॥

तीन इग्यारह छबिस अठारा। जोगिन दक्खिन दिसा बिचारा॥
दुइ पचीस सतरह औ दसा। दक्खिन पच्छिम कोन बिच बसा॥
तेइस तीस आठ पंद्रहां। जोगिन होहि पूरब सामहां॥
चौदह बाइस उनइस सात। जोगिन उतर दिसा कहं जात॥
बीस अठाइस तेरह पांच उत्तर पच्छिम कोन तहं बांच॥

इकइस औ छह जोगिन उतर पुरब के कोन।
यह गुन चक्र जोगिनी बांच जो चहे सिधि होन॥

परिवा नवे पुरब पर भाये। दूइज दसमी उतर अंदाये॥
तीज एकादस अगनू मारी। चौथ दुवादस नैरत वारी॥
पंचमी तेरस दखिन रमेसरि। छठ चौदस पच्छिम परमेसरि॥
सतमी पून्यो वायव आहें। अठ अमावस ईसान लाहें॥
तिथि नखतर गुरवार कहीजे। सुदिन साध परयान धरीजे॥
सगुन दुघड़िया गिन साधना। भदरा दिसासूल बाचना॥
चक्र जोगिनी गिने जो जाने। परवर जीत लच्छ घर आने॥

सुख समाध आनंदघर कीन्ह पयाना पीव।
थरथरात तन कांपे धरक धरक जाय जीव॥

मेष सिंहधन पूरब बसै। वृष कन्या मक्कर जम दिसै॥
मिथुन तुला औ कुम्भ पछाहां। करक मीन विरछिक उतराहां॥
गवन करे कहं उगवे कोई। सनमुख सोम लाभ बड़ होई॥
दहिन चन्द्रमा सुख सरवदा। बायें चन्द्रायत दुख आपदा॥
अदित होय उत्तर कहं कालू। सोमकाल वायव नहिं चालू॥

भूमि काल पच्छिम बुधि नैरित। गुरु दक्खिन सुक्कर अगनीयत॥
पूरब काल सनीचर बसै। पीठ दै काल चले सब हंसै॥

धन नछत्र औ चन्द्रमा औ ताराबल सोय।
समय एक दिन गवने लछमी केतक होय॥

पहिले चांद पूरब दिस तारा। दूजे बसै ईसान विचारा॥
तीजे उत्तर सो चौथे वायव। पंचें सो पच्छिम दिसा गिनायव॥
छठयें नैरित दच्छिन सतें। बसै जाय अगनेय सो अठें॥
नवें चन्द्र जो पृथवी वासा। दसयें चन्द्र जो रहै अकासा॥
ग्यारें चन्द्र पूरब फिर जाय। बहु कलेस में दिवस भंवाय॥
असन भरन रेवती भली। मृगसिर मूल पुनरबसु बली॥
पुख जेष्ठा हस्त अनुराधा। जो सुख चाहै पूजे साधा॥

तिथ नछत्र औ वारइक अष्ट सात खण्ड भाग।
आदि अन्त बुध सो यह दुख सुख अंकम लाग॥

परिवा छठ एकादस नन्दा। दुइज सत्तमी द्वादस मन्दा॥
तीज अष्टमी तेरस जया। चौथ चतुरदस नौमि रिकया॥
पूरन पूनों दसमी पांचें। सुक्रे नन्दे बुध मा नाचें॥
अदित सो हस्त नखत सिधि लहिये। बीफे पुख सरवन ससि कहिये॥
भरनि रेवती बुध अनुराधा। भई अमावस रोहिनि साधा॥
राहु चन्द मुंई संपति आये। चन्द ग्रहन तब लाग सजाये॥
सुनि रकतागज अग्या लीजे। सिद्धि योग गुरपरवा कीजे॥

जेंहि नचत्र होय रवि वही अमावस होय।
बीच परेवा जब मिलै सुरज गहँन तब होय॥

चलहु चलहु भा पिय कर चालू। घड़ी न देखलेत जिव काले॥
समुद लोक धन चढ़ी बिवानां। जो दिन डरे सो आय तुलाना।
रोवहिं मात पिता औ भाई। कोउ न टेक जो कंत चलाई॥
रोवहिं सब नैहर सिंहला। लै बजाय कै राजा चला॥
तजा राज रावन का गयो। छांड़ा लंक बिभीषण लियो॥
फिरी सखी भेंट तज फेरा। अन्त कन्त सो भयो गुरेरा॥
कोइ काहुका नाहिं नियाना। माया मोह बांधा उरझाना॥

कंचन काया नारि की रही न तोला मांस।
कंत कसौटी घालकै चूरा गढ़े कि हांस॥

जो पहुंचाय फिरा सब कोउ। चला साथ गुन अवगुन दोउ॥
औ संग चला गवन सब साजा। वही दई अस पारै राजा॥
डोली सहस चली संग चेरी। सबै पदमिनी सिंहल केरी॥
भल पटोर खरवार संवारी। लाख चार दुक भरी पिटारी॥
रतन पदारथ मानिक मोती। काढ़ भंडार दीन्ह रथ जोती॥
परख सो रतन पारखहिं कहा। दूक दूक नग सूटी वर लहा॥
सहस पांति तुरयन की चली। औ सौ पांति हस्थि सिंहली॥

लिखनी लाग जो लेखा कहै न पारहिं जोर।
अरब खरब औ नीलसंख साहस पदम करोर॥

देख दरब राजा गरवाना। दीठि मांह कोइ और न आना॥
जो मैं होव समुदकै पारा। को है मोहिं जगत संसारा॥
दरब गरब लाभ विष मूरी। दत्त न रहे सत्य हो दूरी॥
दत्त सत्य पै दोनों भाई। दत्त न रहै सत्य पुनि जाई॥

जहां लोभ तहं पाप संघाती। संचै मरै आनकी थाती ॥
सिद्ध दरब आगके थापा। कोई जरा जार कोइ तापा ॥
काहु चांद काहु भा राहू। काहु अमिरत विख भा काहू ॥

तस भूला मन राजा लोभ पाप अंध कूप।
आय समन्दर ठाढ़ भा है दानी कै रूप ॥

बोहित भरी चला ल रानी। दान मांग सत देखी दानी ॥
लोभ न कीजे दीजे दानू। दानहि पुण्य होय कल्यानू ॥
दरब दान देई विधि कहा। दान मोख है दुख नहिं रहा ॥
दान आहि सब द्रव्य कि जूरू। दान लाभ है बाचै मूरू ॥
दान करै रछा मंझनीरा। दाम गहे लै लावै तीरा ॥
दान करन दै दुइ जगतरा। रावन संचा अगिनि महं जरा ॥
दान मेरु बड़ लाग अकारा। सेंत कुबेर बूड़ मंझ धारा ॥

चालिस अंस द्रव्य जहं एक अंस तहं मोर।
नाहिंत जरै कि बूड़ै की निंस मूसहिं चोर ॥

सुनि सुदाम राजैं रिस मानी। कै बौरायस बौरे दानी ॥
सोई पुरुष द्रव्य जो सेतें। द्रव्य हुतें सुनि बातें ऐतें ॥
द्रव्यते गरब करै जो चाहा। द्रव्यते धरती सरग निबाहा ॥
द्रव्यते हाथ आव कैलासू। द्रव्यते अपसर छांड़ न पासू ॥
द्रव्यते निरगुन हो गुन वन्ता। द्रव्यते कुअरूप रूपवन्ता ॥
द्रव्य रहै भुंइ दिपै लिलारा। अस मन द्रव्य हियेकी पारा ॥
द्रव्यते धरम करम औ राजा। द्रव्यते सुद्धि बुद्धि बल काजा ॥

कहा समुद्र देखोगी बड़ी द्रव्य नहिं भांप।
भयो न काहू आपनं मूंद पिटारी सांप॥

आये समुद्र आय सो नाहीं। उठी बायु आंधी उपराहीं॥
लहरें उठीं समुद्र उलथाना। भूला पंथ सरग नियराना॥
अदिन आय जो पहुंचै काज। पहन उड़ाय बहै सो बाज॥
बोहित भई लंक दिसि ताकी। मारग छांड़ कुमारग हांकी॥
जो ले भार निबाहन पारा। सोका गरब करै कन्धारा॥
द्रव्य भार संग काहिन जठा। जें सेंता ताही सो रूठा॥
गहि पखान ले पंख न जड़ा। मोर मोर जें कीन्ह सो बूड़ा॥

द्रव्य जो जानहि अपना भूलहिं गरब मनाहिं।
जेहि उठाय न लेसकहिं बूड़ चलहिं जल माहिं॥

केवट एक बिभीषन केरा। आव मच्छकर करत अहेरा॥
लंका कर अति राकस कारा। आवै चला होय अंधियारा॥
पांच मूंड़ दस बाहीं ताही। धड़भा स्याम लंक जब दाही॥
धुवां उठै मुख स्याम संघाता। निकसै आग कहै जो बाता॥
फेकरे मुंड़ चंवर जनु लाये। निकस दांत मुख बाहेर आये॥
देह रीछकी रीछ डराई। देखत दीठि धाय जनु खाई॥
राते नयन निडर जो आवा। देख भयावन सब डर खावा॥

धरती पायं सरग सिर जानु सहसा बाहु।
चांद सुरज औ नखत महं अस देखे जनु राहु॥

बोहित बही नमानहि खेवा। राकस देखि हंसा जनु देवा॥
बहुते दिनहि बार भइ दूजी। अजगर केर आय भुख पूजी॥

यहि पदमिनी बिभीषन पावा। जानहु आज अयोध्या छावा॥
जानहु रावन पाई सीता। लंका बसी राम रन जीता॥
मच्छ देख जैसें बक आवा। टोय टोय भुईं पांव उठावा॥
आयि नेर होय कीन्ह जो हारू। पूंछा कैम कुसल ब्योहारू॥
जो विस्वासघात का देवा। बड़ विस्वास करैकी सेवा॥

कहां मीत तुम भूलेहु औ जायहु केहि घाट।
हौं तुम्हार अस सेवक लाय देउं तुहिं बाट॥

गाढ़ परे जिव बावर होई। जो भल बात कहै भल सोई॥
राजें राछस नेर बोलावा। आगी कीन्ह पंथ जनु पावा॥
बहु बसाव राछस कहं बोला। पैग टैक भूमी सब डोला॥
तू खिवक खिवक उपराहौं। बोहित तीर लाव गहि बाहौं॥
तु हितें तीर घाट जो पाऊं। नौ गिरही तोड़ा पहिराऊं॥
कुण्डल स्रवण देउं नग लाई। महराकी सौंपों महराई॥
तस राछस तोर पूरों आसा। रछसाइन की रहै न बासा॥

राजें बीड़ा दीन्हों नहिं जानों बिस्वास।
इक अपनी भुख कारन होय मच्छकर दास॥

राछस कहा गुसाइं बिनाती। भल सेवक राछसकी जाती॥
कीना लंक दही श्रीरामा। सेवन छांड़ देह भइ स्यामा॥
अबहूं सेवकरे संग लागी। मानुष भूल होहिं नहिं आगी॥
सेत बन्ध राघव जहं बांधा। तेहितै चढ़ो भार ले कांधा॥
पै अब तुरत दान कुछ पाऊं। तुरत गहो बहं बांध चढ़ाऊं॥

तुरत जो दान पान हंस दीजे। थोरा दान बहुत पुनि कीजे॥
सेवक राय जो दीजे दानू। दान नाहिं सेवा वर मानू॥

देवाचा सतना रहा हत निरमल जेहि रूप।
आंधी बहुत उड़ाय के सार नयो अंधकूप॥

जहां समुद मंझ धार भंडारू। फिरै पानि पाताल दुआरू॥
फिर फिर पानि वही ठांव मरै। फेर न निकसै जो तहं परै॥
वही ठांव महिरावन पूरी। हलकातर यभकातर चूरी॥
वही ठांव महिरावन मारा। परे हाड़ जनु पड़े पहारा॥
परी रीढ़ जेहि ताकर पीठी। सेतबन्ध अस आवै दीठी॥
राछस आन तहां के जुड़े। बोहित भंवर चक्र महं पड़े॥
फिरे लाग बोहित अस आई। जस कुम्हार घर चाक फिराई॥

राजें कहारे राछस जान बूझ बौरास।
सेतबन्ध यह देखे कसन तहां लेजास॥

सुनि बावर राछस तब हंसा। जानहु सरग टूटि भुइं गसा॥
को बावर तुम बोरहि देखा। जो बावर मुख लाख सरेखा॥
बावर तुम जो भुख कहं आनौ। तोहिन समभौ पंथ भुलानौ॥
पंख जो बावर रहि धर माटी। जीभ चढ़ाय भखै सब चांटी॥
महिरावन की रौर जो परी। कहो सो सेतु बन्ध बुधि हरी॥
यहि सो आहि महिरावन पूरी। जहवां सरग नेर घर दूरी॥
अब पछताव द्रव्य जस जोरा। करहु सरग पर हाथ मरोरा॥

जोहि जियत महिरावन लेत जगत कर भार।
जो मरहाड़ न लेसा अस होय परा पहार॥

बोहित भवहिं भवै सब पानी। नाचै राकस आस तुलानी॥
बूड़हिं हस्ति घोर मानवा। चहुं दिस आय जुरे मंसखवा॥
ततखन राज पंख इक आवा। सिखर टूट जस डहन डुलावा॥
परा दीठि वह राखस खोटा। ताकेसि जैस हस्ति बड़ मोटा॥
आय वही राकस पर टूटा। गहि लेउड़ा भंवर जल छूटा॥
बोहित टूक टूक सब भई। ऐसो न जाना वह कहं गई॥
भयी राजा रानी दुइ पाटा। दोनों बहे चले दुइ बाटा॥

काया जीव मिलायके मार कियो दुइ खण्ड।
तन रोवत धरनी चला जीव चला ब्रह्मण्ड॥

मुरछ परी पदमावत रानी। कहं जिव कहं पिव ऐसन जानी॥
जानु चित्र मूरति गहि लाई। पाटा परी बही तस जाई॥
जनमन पवन सही सुकमारा। तेहि सो परा दुख समुद अपारा॥
लछमी नाय समुद की बेटी। ताकहं लच्छ होय जें भेटी॥
खिलत रही सहेली सेती। पाटा जाय लाग तेहि रेती॥
कहेसि सहेली देखो पाटा। मूरति आय लागि वहि घाटा॥
जो देखहिं तिरया है स्वासा। फूल मुवा पै मुई न बासा॥

रंग जो राती प्रेमकी जानहु और बहूट॥
आय बही दधि समुदमें पै रंग गयो न छूट॥

लछमी लखन बतीसों लखी। कहेसि न मरी संभारहु सखी॥
कागद पतिरी जैस सरीरा। पवन उड़ाय परी मंझ नीरा॥
लहर झकोर उड़हिं जल भीजा। तोह रूप रंग नाहीं छीजा॥
आप सीस ले बैठी कोरा। पवन डुलावै सखि चहुं ओरा॥

यारकी समुझ परा तन जीऊ। मांगेसि पानि बोल कै पीऊ॥
पानि पियाय सखी मुख धोई। पदमिन जान कमल संग कोई॥
तब लछमी दुख पूंच मिलोही। तिरया समुझ बात कहु मोही॥

देख रूप तोर आगर लाग रहा चित मोर।
केहि नगरी की नागर काहि नाउं धन तोर॥

नयन पसार चेत धन चेती। देखी काह समुदकी रेती॥
आपन कोउ न देखिसि तहां। पूंछसि को तुम को हम कहां॥
अहै जो सखी कमल संग कोई। सो नाहीं मोहिं कहा बिछोई॥
कहां जगत मन पिया पियारा। जस सुमेरु बिधि गरु संवारा॥
ताकर गरवी प्रीति अपारा। चढ़े हिये जनु चढ़े पहारा॥
रहै न गरवी प्रीति सो झांपी। कैसे जियों भार दुख चांपी॥
कमल करी की जोरी नांहा। दीन्ह बहाय उदधि जल मांहा॥

आवा पवन बिछोहका पातिपरा बिकरार।
तरवर तजी जों चूरकी लागी केहिकी डार॥

कहनि न जानहिं हम तोर पीऊ। हम तू पाइ रहा न जीऊ॥
पाटा मरी आय तू बही। ऐस न जानहिं धौं कहं अही॥
तब सुधि पदमावत मन भई। संवरि बिछोह मुरछ मर गई॥
नयनहिं रकत सुराही ढारा। जनहु रकत सिर काट पवारा॥
खनहिं चेत खन होंबिकरारा। भा चन्दन बन्दन सब छारा॥
बावर होय सो परी पुनि पाटा। देहु बहाय कन्त जेहि घाटा॥
की मोहिं आगदेय रच होरी। जियत न बिछुड़े सारस जोरी॥

जेहि सर मार बिछोगा देइ बही सिर आग।
लोग कहैं यहि सर चढ़ौं हौं सो जरौं पिय लाग॥
काया उदधि चितौं पिय पाहां। देखौं रतन सो हिरदय माहां॥
जनहु आहि दरपन मम हिया। तेहि महं बैठि देखावे पिया॥
नयन नीर भीजत मुठ दूरी। अब तेहि लाग मरौं सुठ झूरी॥
पिय हिरदय महं भेंट न होई। करो मिलाव कहौं केहि रोई॥
स्वास पास नित आवे जाइ। सो न संदेस कहै मोहिं आई॥
नयन कौड़िया भइ मंडराहीं। थिरक सार पै आवहिं नाहीं॥
मन भंवरा वह कमल बसेरी। है मरजिया न आयी हेरी॥
साथी आथ नियाथ जो सके न साथ निबाहि।
जो जिय जारे पिय मिले भेंटरे जिय जर जाहि॥
सती होय कहं सीस उघारी। मन सहं बीज घावजिमि मारी॥
सेंदुर जरै आग जनु लाई। सिर की आग संभार न जाई॥
छूट मांग सब मोति परोई। बारहिं बार गिरहिं जनु रोई॥
टूटहिं मोति बिछोह के भरे। सावन बूंद गिरहिं जनु झरे॥
फेर फेर कर जोवन करा। जानहु कनक अगिन महं जरा॥
अगिन मांग पै देइ न कोई। पाहुन पवन पान सम होई॥
खीन लंक टूटी दुख भरी। बिन रावन केहि वर होय खरी॥
रोवत पंख बिमोही जनु कोकिला अरण्य।
जाकर कनक लुटा सो बिछुड़ी प्रीतम खण्ड॥
लछमी लाग बुझावे जीउ। नामर बहिन मिलहि तोर पीउ॥
पियो पानी होव पवन अधारी। जल हौं तुह समुद्रकी बारी॥

मैं तोहिं लाग लेत खटवाटू। खोजत पिते जहां लग घाटू॥
हौं जेहि मिलौं ताहि बड़ भांगू। राज पाट औ देउं सुहागू॥
कहि बुझाय कै मंदिर सिधारी। भइ ज्योनार न जेवै नारी॥
जेहिरे कन्त कर होय विछोवा। कातेहि नींद भूख सुख सोवा॥
जीव हमार पीव लै आछा। दरसन देव लेव चित बाछा॥

लछमी जाय समुद्र पहं यें वातें सब चाल।
कहा समुद्र पहे घट मोरे आन मिलावौं काल॥

राजा जाय तहां वहि लागा। जहां न कोइ संदेसी कागा॥
तहां एक परबत हा धूंगा। जहवां सन कपूर औ मूंगा॥
तहं चढ़ हेरा कोइ न साथा। द्रव्य समेट कुछ लाग न हाथा॥
रहा जो रावन केर वसेरा। गोह राय कोइ मिले न हेरा॥
डाढ़ मारके राजा रोवा। कै चितौर गढ़ राज विछोवा॥
कहां मोर सब द्रव्य भंडारू। कहां मोर सब कटक कंधारू॥
कहां तुरंग मोर बांकावली। कहां मोर हत्यी सिंहली॥

कहं रानी पदमावत जीव बसे जेहि माहिं।
मोर मोरके खोयीं भूल गरव औ गाहिं॥

चंपा भंवर गुरु जो मिलावा। मांगी राजा वेग न पावा॥
पदमिन चांह जहां सुन पाउं। परौं आग औ पानि धसाउं॥
ढूंढां प्रबंत मेरु पहारा। चढ़ी सरग रौं परां पतारा॥
कहां सो गुरु पाउं उपदेसी। अगम पंथ कर होय संदेसी॥
परां आय यह समुद अथाहा। जहां न वार न पार न थाहा॥

सीता हरन राम संग्रामा। हनुमत मिला जिता तब रामा॥
मोहिं न कोइ बिनवौ केहि रोई। को सहाय उपदेसिक होई॥

भंवर जो पावै कमल कहं मन चारत बहु केल।
आय परा कोइ हस्ति तहं चूर किये सो बेल॥

कासों पुकारों का पहं जाऊं। गाढ़े मीत होय तेहि ठाऊं॥
को यह समुद मथै बल बाढ़ा। को मथ रतन पदारथ काढ़ा॥
कहां सो ब्रह्मा बिष्णु महेसू। कहां सुमेरु कहां वह सेसू॥
को अस साज देई मोहिं आनी। बासुकि दाम सुमेरु मथानी॥
को दधि समुद्र मथ जस मथा। करनी सार न कहिये कथा॥
जौलहि मथन कोइ द जोऊ। सूधी अंगुरि न निकसै घीऊ॥
लै नग मोर समुद भा बटा। गाढ़ परे तौ लै परगटा॥

लील रहा अब ढील है पेट पदारथ मेल।
को उजियार करै जग झांपा चन्द उघेल॥

ए गुसाइं तू सिरजन हारू। तुइ सिर जायहि समुद अपारू॥
तुइ अस गगन अन्तरिख राखा। जहां न ठेक नथूनि नखांभा॥
तुइ जल ऊपर धरती राखो। जगत भार लै भार न थाको॥
चांद सुरज औौर नख तहिं पाती। तोरे डर धावहिं दिन राती॥
पानी पवन आग औ माटी। सबकी पीठ तोर हैं सांटी॥
सोइ मूरख औ बाउर अन्धा। तोहिं छांड़ चित औरहि बन्धा॥
घट घट जगत तोर है दीठी। हौं अन्धा जेहि सूझ न पीठी॥

पवन हिये भा पानी पानि हिये भइ आग।
आग हिये भइ माटी गोरख धन्धे लाग॥

तुइं जिव तन मिल वस है आज। तुही बिछोवस करेसि मिलाज
चौदह भवन जो तोरे हाथा। जहं लग बिछुड़ी आव इक साथा
सब कर मरम भेद तोहि पाहां। रोम जमावहि टूटी जाहां॥
जानेसि सबै अवस्था मोरी। जस बिछुड़ी सारस की जोरी॥
एक मुइ रर मुई सो दूजी। रहा न जाय आयु अब पूजी॥
झूरत तपत दगध का मरौं। कलपौं माथ बेग निसतरौं॥
मरौं सो ले पदमावत नाऊं। तुइं कर्त्तार करेसि इक ठाऊं॥

दुख तो प्रीतम देखिये सुख नहिं सोवे कोय।
यही ठांव तन डरपै मिलन बिछोवा होय॥

कहिके उठा समुद मंहं तावा। काढ़ि कटार ग्रीव ले लावा॥
कहा समुद्र पाप अब घटा। ब्राह्मन रूप आय परगटा॥
तिलक दुवादस मस्तक दीन्हे। हाथ कनक वैसाखी लीन्हे॥
मुद्रा स्रवन जनेउ कांधे। कनक पत्र धोती तरि बांधे॥
पांवर कनक जड़ाऊ पाऊं। दीन्ह असीस आय तेहि ठाऊं॥
कहो कुंवर मोसे सत बाता। काहें लाग करेसि अपघाता॥
परहेसि मरेसि कि कौने लाजा। आपन जिव देइस केहि काजा

जन कटार गर लावसि समझ देख मन आप।
सकत जीव जो काढ़ेसि महादोष औ पाप॥

को तुम उतर देइ हो पांड़े। सो बोलै जाकर जीव भांड़े॥
जम्बूदीप केर हौं राजा। सो मैं कीन्ह जो करत न छाजा॥
सिंहलदीप राज घर बारी। सो मैं जाय बिवाही नारी॥
लख बोहित दायज ते भरी। नग अमोल औ सब निरभरी॥

रतन पदारथ मानिक मोती। हतो न खांगी संपति ओती॥
वहल घोड़ हस्ती सिंहली। औ संग कुंवर लाख दुइ वली॥
तेहि गोहन सिंहल पदमिनी। इक सो एक चाह रूपमनी॥

पदमावत जग रूप मन कहं लग कहुं उहेल।
ते समुद्र महं खोयों हौं का जियों अकेल॥

हंसा समुद्र होय उठा अजोरा। जग जो बूड़ सब कहि कहि मोरा
तोर होय तोहि परे न वेरा। बूझ विचार तुहीं कहुं केरा॥
हाथ मरोर धुने सिर मांखी। पै तोहि हिये न उघरे आंखी॥
बहुतें आय गये सिर मारा। हाथ न रहा झूंठ संसारा॥
जो पै जगत होत थिर माया। सैंतत सिद्धि न पावत राया॥
सिद्धे द्रव्य न सैंता गाड़ा। देखा भार चूंब की छाड़ा॥
पानी कौ पानी महं गई। तुइं जो जिया कुसल सब भई॥

जाकर दीन्ह जीव औ काया लेहि चाह जब चाव।
धन लछमी सब ताकर लिहे तो का पछताव॥

अनपाड़े पर कही काहानी। जो पाऊं पदमावत रानी॥
तप के पावा मिल कै फूला। पुनि तेहि खोइ सोइ पंथ भूला॥
पुरुष न आपन नारि सराहा। सुये गये संवरा पै चाहा॥
कहं असनारि जगत उपराहीं। कहं अस जीव मिलन सुख छाहीं
कहुं अस रहस भोग अब करना। ऐसे जिये चाहि भल मरना॥
जहं अस परी समुद नग दिया। तेहि किम जिया चहै मर जिया
जस ये समुद दीन्ह दुख मोका। दे हत्या झगरौं सिव लोका॥

कामें यहिक नसावा कामें संवरा दाव।
जाय सरग पर होय है यहि कर मोर नियाव॥
जो तूसुवा कित रोवस खरा। ना सुर मरे न रोवै मरा॥
जो मरभा औ छांड़ेसि काया। बहुर न करे मरनकी दाया॥
जो मर भयो न बूड़ै नीरा। बहुत जाय लागी पै तीरा॥
तुह्यों एक मैं बावर भेटा। जैस राम दसरथ कर बेटा॥
बहुं नारि कर पड़ा बिछोवा। वही समुद मह फिरि फिरि रोवा
पुनि जो राम खोई भा मरा। तब एकांत भयो मिल तरा॥
तस मर छोड़ मूंद अब आंखो। लावौं तीर टीक बैसाखौ॥
बावर अन्ध प्रेम का लुबधा सुनत वही भा बाट।
निमिस एक महं लेगा पदमावत जेहि घाट॥
पदमावत कहं दुख तस बीता। जस असोक बिरवा तरि सीता॥
कनक लता दुइ नारंग भरी। तेहिक भार उठ सकी नहिं खरी॥
तेहि पर अलकभुअंगिनि डसा। सिर पर चढ़े हिये परगसा॥
रहि मरनाल टीक दुख दाधी। आधी कमल भई ससि आधी॥
नलिन खंड दुइ तस करहाऊं। रोमावली बिछूक कहाऊं॥
रही टूट जिमि कंचन तागू। को पिय मिलवे देइ सुहागू॥
पान न खावै करै उपासू। फूल सूख तन रही न बासू॥
गगन धरति जल बुड़गये बूड़त होय निरास।
पिय पिय चातक ज्यों ररी मरै सेवात पियास॥
लच्छी चंचल नारि परेवा। जेहि सत होय करै की सेवा॥
रतनसेन आवै जेहि घाटा। अगमन जाय बैठ तेहि घाटा॥

और भई पद्मावत रूपा। कीन्हेसि छांह जरै जेहि धूपा॥
लख सो कमल भंवर होय धावा। स्वास लीन्ह वह बास न पावा॥
निरखत आय लच्छमी दीठी। रतनसेन तब दीन्हीं पीठी॥
जो भल होत लच्छमी नारी। तज महेश कित होत भिखारी॥
पुनि धन फिर आगी है रोई। पुरुष पीठ कस दीन्ह निछोई॥

हौं रानी पद्मावत रतनसेन तुइं पीउ।
आय समुद्र महं छांड़े अब रोय देत मैं जीउ॥

मैं हौं सोई भंवर औ भोजू। लेत फिरौं मालति कर खोजू॥
मालति नारि भंवर अस पीऊ। कहं वह बास रहै थिर जीऊ॥
कातुइं नारि करेसि अस रोई। फूल सोई पै बास न होई॥
भंवर जो सब फूलन कर फेरा। बास न लेइ मालतिहि हेरा॥
जहां पाव मालति कर बासू। वर्तौं जिव दै हो वै दासू॥
कित वह बास पवन पहुंचावे। नव तन होय पेट जिव आवे॥
हौं वह बास जीव बल देऊं। और फूलको बास न लेऊं॥

भंवर मालतिहि पै चहै कांटन आवे दीठ।
सौंह भाल खाये हिये पै फिरै नहिं पीठ॥

तब हंस कह राजा वह ठाऊं। जहां सो मालति चल लै जाऊं॥
लै सो आय पद्मावत पासा। पानि पियाई मरत पियासा॥
पानी पिया कमल जस तपा। निकसा सुरज समुद महं छिपा॥
मैं पांवा पिय समुद के घाटा। राज कुंवर मन दिपै ललाटा॥
दसन दिपै जस हीरा ज्योती। नयन कचूर भरे जनु मोती॥

भुजा लंक उर केहर जिता। मूरति कान्ह देखि गोपिता॥
जस नल तपते दमनहिं पूंछा। तर बिन प्रान पिंड है छूंछा॥

जस तुइं पदक पदारथ तेन रतन तुहिं योग।
मिला भंवर मालति कहं करहु होउ दिस भोग॥

पदक पदारथ खीन जो होती। सुनतहि रतन चढ़ी मुख ज्योती
जानहु सूरज कीन्ह परकासू। दिन बहुरा भा कमल विकासू॥
कमल जो बिहंस सुरज मुख दरसा। सुरज कमल दीठी सो परसा
लोचन कमल श्री मुखसूरू। भयो चत्यंत दुहूं रस रूरू॥
मालति देख भंवर गा भूली। भंवर देख मालति बन फूली॥
देखा दरस भयी इक पासा। वह वहकी वह वहकी आसा॥
कंचन दाह दीन्ह जनु जीऊ। सूरज उगा छूटगा सीऊ॥

पायं परी धन पीयके नयनन सों रज भेंट।
अचरज भयो सबन कहं भइ ससि कमलहि भेंट॥

जन काहू कहं होय बिछोऊ। जस वेमिले मिले सब कोऊ॥
पदमावत जो पावा पीऊ। जनु मरजिये परा तन जीऊ॥
की न्योछावर तन मन वारे। पांयन परौ थाल कै नारे॥
नव अवतार दीन्ह बिधि आजू। रही छार मानुष भइ साजू॥
राजा रोय घाल गरे पागा। पदमावत के पांयन लागा॥
तन जिय महं बिधि दीन्ह बिछोऊ। अस नगरी तब चीन्ह न कोऊ
सोई मार छार के भेंटा। सोइ जियाय मरावे भेंटा॥

मुहमद मीत जो मन बसे तेही मिला बिधि आन।
संपति बिपति पुरुए कहं काह लाभ का हान॥

लछमी सों पदमावत कहा। तुम प्रसाद पायो जो चहा ॥
जो सब खोय जाहिं हम दोऊ। जो देखे भल कहै न कोऊ ॥
जे सब कुंवर आय हम साथी। औ जित हस्ति घोर आवाथी ॥
जो पावे सुख जीवन भोगू। नाहित मरन भरन दुख रोगू ॥
तब लछमी गइ पिता के ठाऊं। जो यहि कर सब बूड़ सो पाऊं
तब सो जरी अमरित ले आवा। जो मरहत सो छिड़क जियावा
एक एक कै दीन्ह सो आनी। भा संतोष मन राजा रानी ॥

आय मिले सब साथी हिल मिल करहिं अनन्द।
भई प्राप्त सुख संपति गयो छूट दुख बन्ध ॥

और दीन्ह बहु रतन पखाना। सोन रूप जो मनहिं न आना ॥
जे बहु मोल पदारथ नाऊं। कातेहि बरन कहूं तुम ठाऊं ॥
तेहि अर भाव रूप को कहा। इक इक नग लहो बर लहा ॥
हीर फार बहु मोल जो अही। ते सब नग चुन चुनके गही ॥
जो इक रतन भुनावै कोई। करे सोइ जो मन महं होई ॥
दरब गरब मन गयो भुलाई। हंम समलच्छ मनहिं नहिं आई ॥
लघु दीरघ जो द्रव्य बखाना। जो जेहि चहो सोई तेहि माना ॥

बड़ औ छोट दोउ सम स्वामि कारजो सोय।
जो चाहो जेहि काल कहं वही काज सो होय ॥

समुद्र और लक्ष्मीखण्ड।

दिन दस रहौ जाय पङ्गनाई। पुनि भइ बिदा समुद सो जाई॥
लछमी पदमावत सो भेंटी। जो सो कहा अपनी सो बेटी॥
समुदर दीन्ह पान कर बीरा। भरके रतन पदारथ हीरा॥
और पांच नग दीन्ह विसेखी। सरवन सुनी नयन नहिं देखी॥
एक सो अमरित दूसर हंसू। औ तीसर पंखी कर बंसू॥
चौथ दीन्ह सावक सादूरू। पांचों परस जो कंचन भूरू॥
तुरत तुरङ्गम दोज चढ़ाई। जल मानुष अगवा संग लाई॥

भेंट समुंदिन तब कियो फिरे नायकी साथ।
जल मानुष तबहीं फिरे जब सो आय जगनाथ॥

जगन्नाथ दरसन कहं आयि। भोजन रींधा भात पकायि॥
राजें पदमावत सों कहा। सांठ नांठ कछ गांठ न रहा॥
सांठ होय जासों सो बोला। नष्ट जो पुरुष पातज्यों डोला॥
सांठें रंक चल भौराई। नष्ट राव सब कहं बौराई॥
सांठें आव गरब तन फूला। नष्टहि बोल बुद्धि बल भूला॥
सांठें जागनींद निसि जाई। नष्टे कहे होय औघाई॥
सांठ दीठि ज्योति हो नयना। नष्ट हियि सुख आव न वैना॥

सांठें रहे सिध न तन नष्टहि आगर भूख।
बिन गंठ वृक्ष निपत्र ज्यों ठाढ़ ठाढ़ पै सूख॥

पदमावत बोली सुनु राजा। जीव गयि धन कौने काजा॥
रहा द्रव्य तब कीन्ह न गांठी। पुनि कित मिलै लच्छ जो नांठी॥

मुकतौ सांठ गांठ जो करे। सांकर परे सोई उपकरे॥
जेहि तन पंख जाय जहं ताका। पैग पहार होय जो थाका॥
बकमौ रही दीन्ह मोहिं बीरा। भरकै रतन पदारथ हीरा॥
काढ़ एक नग वेग भुजाऊ। बहुरे लच्छि फेर दिन पाऊ॥
द्रव्य भरोस करे जन कोई। सांठ सोई जो गांठी होई॥

जोर कटक पुनि राजा घरकहं कीन्ह पयान॥
दिवसहिं भानु अलोप भा बासुकि इन्द्रसकान।

आय चितोर नेर भा राजा। फिरा जियत इन्द्रासन गाजा॥
बाजन बाजे होय अडोरा। आवहिं बहल हस्ति औ घोरा॥
पदमावत चंडोल जो बैठी। पुनि गई उलट सरग सों दीठी॥
यहि मन ऐंठा रहै न सूधा। विपति न संवरे संपति लुबधा॥
सहस बरस दुख सहै जो कोई। घरी एक सुख बिसरे सोई॥
जोगिन यही जान मन मारा। तेहुं न यह मन मरे अपारा॥
रहै न बांधा बर भा जेही। तेलियां मार डार पुनि तेही॥

मुहम्मद यहि मन अमर है कहु कित मारा जाय।
कहां सदाशिव आवें घटते घटत बिलाय॥

कुंवर जो वहि वहि घाटन लागी। बहु बिकरार सोंय जनु जागी
बिकल अचेत चेत तिन कहा। संग साथ नहिं दूसर रहा॥
कहां रहे आये हम कहां। जानी नहीं कि जायहि कहां॥
आगहिं दया दीठि कै आपी। खोल सो नयन दीन्ह बिधि झांपी
जेहि के संग पदमिनी बांधी। वहत अनंद बहुत दृत नाधी॥

अब मग मिले आय जगनाथा। सबै आयके नांवहिं माथा॥
अति दुख मिले आय के राजा। सोई ते गयी उनकी आजा॥

सो हीरामन रतन रवि सो पद्मावत लाल।
को पद्मावत सो कुंवर सो पीतम प्रति पाल॥

नागमती कहं अगम जनावा। गई तपन बरषा जनु आवा॥
रही जो मुइ नागिनि जस तुचा। जिव पायें तनकी भइ सुचा॥
सब दुख जस केंचुल गा छूटी। होय निसरी जस बीर बहूटी॥
जस भुइं दहि असाढ़ पलहाई। परहिं बूंद औ सोंध बसाई॥
वही भांति पलही सुख बारी। उठी करलि नइ कोंप संवारी॥
हुलस गंग जिमि बाढ़े लेई। जोवन लाग हिलोरे देई॥
काम धनुष सर दे भइ ठाढ़ी। भाग्यो विरह रहै जो बाढ़ी॥

पूंछहिं सखी सहेली हिरदै देख आनंद।
आज वदन तुम निरमल कहां उवा है चंद॥

अबलग सखी पवन रहि ताता। आज लाग मोहिं सीतल गाता
महि हुलसी जस पावस छाहां। तस हुलास उपजा जिय माहां
दसौ दावकी गा जो दसहरा। पलटा सोई नाव लै महरा॥
अब जोवन गंगा होय बाढ़ा। औटन कठिन मार सब काढ़ा॥
हरियर सब देखि संसारा। नई चार जनु भा अवतारा॥
भाग्यो विरह करत जो दाहू। भा मुख चन्द छूट गा राहू॥
लहि कहिं नयन हार हिय खिला। को धौं हितू आयके मिला

कहतहिं बात सखिन सो ततखन आवा भाट।
राजा आय नेर भा मंदिर बिछायो पाट॥

सुनतहि खन राजाकेर नाऊं। भा हुलास सब ठावहिं ठाऊं॥
पलटा जनु वरषा ऋतु राजा। जस असाढ़ आवै दर साजा॥
देख से छत्र भई जगछाहां। हस्ति मेघ उनयी जगमाहां॥
सेन पूर आई घन घोरा। रहसहुचाव वरषि चहुं ओरा॥
धरति सरग अब होय मिलावा। भरहिं पुखर औ ताल तलावा
उठी लहक महि सुनि तेहि नामा। ठांवहिं ठांव दूब अस जामा॥
दादुर मोर कोकिला बोली। हत जो अलोप जीभ सब खोली॥

भये असवार पिरथमें मिले चले सब भाय।
नदी अठारह खण्डा मिली समुद्रकहं जाय॥

बाजत गाजत राजा आवा। नगर चहूंदिस बाज बधावा॥
विहंस आय माताओं मिला। रामहि जनु भेंटी कौसिला॥
साजे मंदिर वन्दनवारा। औ बहु होय सो मंगलचारा॥
पद्मावत कर आव विमानू। नगमति हृदक उठी तस भानू॥
जनहु छांहमहं धूप देखाई। तैसे झार लाग जो आई॥
सहो न जाय सौतकी झारा। दुसरे मन्दिर दीन्ह उतारा॥
भई उहां चौखण्ड बखानी। रतनसेन पद्मावत आनी॥

पुहुप सुगन्ध संसार महं रूप बखान न जाय।
हेम सेत उग्र गा जना जगत पात पहिराय॥

बैठ सिंहासन लोग जोहारा। निधनी निरगुन द्रव्य वोहारा॥
अगनित दान निछावर कीन्हा। मंगतन दान बहुतकी दीन्हा॥
तुरी हस्ति ले महंवत मिले। तुलसी ले उपरोहित चले॥
वेटा भाय कुंवर जेत आवहिं। राजा हंस हंस गले लगावहिं॥

नेगी गीज मिले अरकाना। पंवरथ वाजे घर मसूयाना॥
मिले कुंवर कापर पहिराये। देकर द्रव तिन घरहिं पठाये॥
सबकी दसा भई पुनि दुनी। दान कि दांग सवै जग सुनी॥

बाजै पांच सबद नित सिद्ध बखाने भाट।
छत्तिस गौरी षट दरसन आय जुरे वह पाट॥

सब दिन राजा दान देवावा। भई निस नागमतीपहं आवा॥
नागमती मुख फेरि कै वैठी। सो नहिं करहि पुरुष सी दीठी॥
ग्रीषम जरत छोड़ कै जाये। सो मुख कौन देखावे आये॥
जोह जरै परबत बन लागी। उठी झार पंखी उड़ भागी॥
अब साखा देखी औ छांहां। कौने रहस पसारेसि बांहां॥
कौन्यो थिरक वैठि तेहि डारा। कौन्यो कलो केलि कुरबारा॥
तू जोगी होय गा वैरागी। हौं जर छार भयों तुहि लागी॥

काह हंसो तुम मोसों कियो औरसो नेह।
तुहिं मुख चमकै बीजुली मुहिं मुख वरषि मेह॥

नागमती तू पहिल विवाही। कठिन सुप्रीति दही जस दाही॥
बहुते दिनन आव जो पीऊ। धन न मिले धन पाहन जीऊ॥
पाहन लोह पोढ़ जग दोऊ। सोऊ मिलें जो होय विछोऊ॥
भलहिं सेत गंगाजल दीठा। जमुन जो स्याम नीर अति मीठा॥
काह भयो तन दिन दस दहा। औ वरषा सिर ऊपर अहा॥
कोइ कदि पास आसके हेरा। धन वह दरस निरास न फेरा॥
कण्ठ लायकै नारि मनाई। जरी जो वेल सींच पलहाई॥

सहस अठारह शाख फर दाड़िम दाख जंभीर।
सबै पंखि मिल आय जोहारे लौट वही भइ भोर॥

जो भा मेरु भयो रंग राता। नागमती हंसि पूंछी बाता॥
कहु जो कन्त परदेश लुभाने। कस धन मिलो भोग कस माने॥
जो पद्मावत सुठ है लोनी। मोरे रूप कि सरवर होनी॥
जहां राधिका अपछर माहां। चन्द्रावलि सर पूज न छाहां॥
भंवर पुरुष अस रहो न राखा। तजे दाख महुवा रस चाखा॥
तज नारीयर फूल सुहावा। कमल बसेंधी सो मन लावा॥
जौ अन्हवाय भरे अरगजा। तौहु विसायंध वहि नहिं तजा॥

काह कहूं हौं तोसों कुछ नहिं तोरे भाव।
यहां बात मुख मोसों वहां जीव वह ठांव॥

दुखकि कथा कहि रयनि विहानी। भयो भोर जहं पद्मिनिरानी
भांनु देखि ससि वदन मलीना। कमल नयन रातो तन खीना॥
रयनि नखत गिन कीन्ह विहानू। विमल भई देखी जस भानू॥
सुरज हंसा ससि रोय डफारा। टूट आंसु जस नखतहिं मारा॥
रहो न राखो होय निसासी। तहंवां जांउ जहां निसि वासी॥
हौं कै नेह कुंवां महं मेलो। सौंचहि लाग भ्हरानी वेलो॥
भयी दुइ नयन रहंट की घरी। भरहिं लै ढारैं छूछी भरी॥

सुभ्र सरोवर हंस जल घटा तो होय विछोय।
कमल प्रीति नहिं परिहरे सूख वेलपर होय॥

पद्मावल तुइ जीव पराना। जियते जगत पियार न आना॥
तुइ जिम कमल बसी हियमाहां। हौं होय अलि बेधातोहिंपाहां

ालती कली भंवर जो पावा। सो तज आन फूल कित भावा॥
ँ हौं सिंहल की पद्मिनी। सरन पूज जम्बू नागिनी॥
ौं सुगन्ध निरमल उजियारी। वह विषभरी डेरावन कारी॥
ोरी बास भंवर संग लागहिं। वह देखत मानुष डर भागहिं॥
ौं पुरुषन की चितवन दीठी। जेहि के जिय अस अहहौं पैठी

ऊंची ठांव जो बैठे कर न नीचे संग।
जहां सो नागिन धर गई काला करै सो अंग॥

ालही नागमती की बारी। सोने फूल फूल फुलवारी॥
ानंवत पंख रही सब रहे। सबै पंख बोलत कछ कहे॥
ारी सुवा महर कोकिला। रहसत आय पपीहा मिला॥
ारिल अवद महोक सुहावा। काग कुराहर करहि सो आवा॥
ोग बिलास कीन्ह अति फेरा। वासहिं रहसहिं करहिं बसेरा॥
ाचहिं पांडुक मोर परेवा। निफल न जाय काहुको सेवा॥
ँ उजियार बैठ जस तपै। खूसट मुख न देखावै छिपै॥

संग सहेली नागमति अपनी बारी माहिं।
फूल चुनहिं फल तोरहिं रहस कूद सुख छाहिं॥

ाही जूही तेहि फुलवारी। देख रहस रहि सकी न बारी॥
ति न बातन हिये समानी। पदमावत सो कहासो आनी॥
ागमती है अपनी बारी। भंवर मिला रस करै संवारी॥
खी साथ सब रहसहिं कूदहिं। औ सिंगारहार सब गूंदहिं॥
ुम जो बकावल तुम सो लड़ना। बकचन कहो चहो जस करना

नागमती नागेसर रानी। कमलन्ह आछी अपनी बानी॥
जस सेवती गुलाल चमेली। तैसि एक जन बहु अकेली॥

अब सुदरसन गूजा तब सत बरनी जोग।
मिला भंवर नागेसर सेते वहो देहि सुख भोग॥

सुनि पदमावह रिसन संभारी। सखिन साथ आई फुलवारी॥
दोउ सौति मिल पाट जो बैठी। हिय बिरोध मुख बातैं मीठी॥
बारी दृष्टि सो रंग सो आई। पदमावत हंस बात चलाई॥
बारी सफल अहै तुम रानी। है लाई पै लाय न जानी॥
नागेसर श्रो मालति जहां। सुगन्ध राव नहिं चाहौ तहां॥
रहा जो मधुकर कमल पिरीता। लाग्यो जायक रौल कि रीता॥
जहं अमिली बांकी हिय माहां। तहं न भाव नारंग कीछाहां॥

फलहि फूलके फर जहां देखहु मनहि विचार।
अम्ब लाग जेहि बारी चंप लाग तेहि बार॥

अनतुम कही नीक यह सोभा। पै फल सोइ भंवर जेहि लोभा॥
स्याम जांब कस्तूरी चोवा। अम्ब जो जंच हिरदय तेहि रोवा॥
तेहि गुन अस भइजां नेवारी। लाई आन मांझ केवारी॥
जल बाढ़े वहिया जो आई। है बांकी इमली सिर नाई॥
तु कस पराई बारी दूखी। तजे पानि धावहु मुख सूखी॥
उठे आग दोउ डार अभेरा। कौन साथ तुहिं बैरी केरा॥
जो देखी नागेसर बारी। लाग मरी अब सूगा मारी॥

जो सरवर जल बाढ़े रहै सो अपुनी ठाउं।
तज नागेसर की बहि जाउं न तुहिं अंवराउं॥

तेहिं अंबराउं लीन्ह का जूरी। काहे भई नींब सुख मूरी॥
भई बेर कित कुटिल कटीली। तेंदू कीन्ह चाह बकसीली॥
नारंग दाख न तुम्हरी बारी। देख मरहिं जेहि सूगा सारी॥
श्रौन सदाफर तुरंज जंभीरा। कटहर बड़हर लीका खीरा॥
कमलके हिरदेय रोवां केसर। तोड़ न सर पूजो नागेसर॥
जहं कटहर कीउ बरहिं न पूंछी। बड़ पीपर का बोलहिं छूंछी॥
जो भल देखो सोई फीका। ताकर काह सराहे नीका॥

रह्ह तू अपनी बारी मोसों जूझ न बाझ।
मालति उपमन पूजो पुनि कर खोजा खाज॥

जो कटहर बड़हर बड़ बेरी। तोहि अस नाहिं जो कोकाबेरी॥
स्याम जान मोर तुरंज जंभीरा। कड़ुई नींब तू छांह गंभीरा॥
नरियर दाख बिहो कहं राखों। गलगल जाउं शोति नहिं भाखों
तोर कहे होय मोर काहा। फरे बृच्छ कोउ ढेल न बाहा॥
नवे सदाफर सो नित फर। दाड़िम देख फाट हिय मरे॥
जाफर लौंग सुपारि छुहारा। मिरच होय जो सहे न पारा॥
हौं सुपान रंग पूजन कोई। बिरह जो जरे चून जर होई॥

लाजहि बूड़ मरेसि नहिं जभ उठा वष वाहं।
हौं रानी पिय राजा तो कहं जोगी नाहं॥

हौं पदमिनी मानसर केवा। भंवर मराल करहिं मोर सेवा॥
पूजा जोग दुई हौं गढ़ी। मग महेसकी माथे चढ़ी॥
जानो जगत कमल की करी। तोहि अस नहिं नागिन बिषभरी॥
तुइं सब लिधी जगतके नागा। कोयल वेष न छांड़ेसि कागा॥

तू भुलेल हौं हंसकी जोरी । मोहिं तोहिं मोती पोतकी चोरी ॥
कंचन कलो रतन नग बिना । जहां पदारथ सोह नहिं पना ॥
तुइ तोराह्ली ससिउजियारी । दिनहि न पूजी निसि अंधियार

ठाढ़ हौंसि जेहि ठाईं मसि लागी तेहि ठाउं ।
तेहि डर रांधन वैठों जनु सांवर होय जाउं ॥

कमल सो कौन सुपारी रोठा । जेहिकै हिये सहस दस कोठा ॥
रहौ न झापे आपन गटा । सखति उघेल वहै परगटा ॥
कमल पत्र दाड़िम तोर चोलौ । देखिसि सूर देस है खोलौ ॥
ऊपर राता भीतर पियरा । जारों वही हरद अस हियरा ॥
यहां भंवर मुख बातहि लावसि । वहां सुरज कहं हंस हंस लावसि
सब निसि तप तप मरेसि पियासी । भोर भयी पावसि पिय वासी
सेजवा रोय रोय निसि भरसी । तू मोसों का सरवर करसी ॥

सुरज किरन तेहि रावी सरवर लहर न पूज ।
भंवर यहां तोह पावै धूप देह तोर भूज ॥

दैहौं कमल सुरज की जोरी । जो पिय आपन तेहि का चोरी ॥
हौं वह आपन दरपन लेखौं । करौं सिंगार भोर मुख देखौं ॥
मोर बिकास वहिक परकासू । तुइ जर मरेसि निहार अकासू ॥
हौं वहसों वह मोसों राता । तिमिर बिलाय होत परभाता ॥
कमल के हिरदै महं जो गटा । हरियर हार कीन्ह का घटा ॥
जाकर दिवस तेही पै आवा । कार रयनि कित देखै पावा ॥
तुइ जमर जेहि भीतर मांखी । चाहहिं उठहिं मरन को पांखी

भूपन देखी बिष भरी अमिरत सो सर पाव।
जेहि नागिन डस सो मर लहर सुरजकी आव॥
फूलहिं कमल भानु के उये। पानी सैल होय जड़ छुये॥
फिरहिं भंवर जिस तो नयनाहां। नील बिसायंध सब तो पाहां॥
मच्छ कच्छ दादुर तोहिं आसा। बक औ पंख बसहिं तोहिं पासां
जे जे पंख बास तोहिं लयी। पानी महं सो बिसायंध भयी॥
जो उजियार चांद होय उई। बदन कलंक डोंम ले छुई॥
औ मोहिं ताहिं निसि दिन कर बीचू। राहुके हाथ चांदकी मीचू
सहस बार जो धोवै कोई। तोहु बिसायंध जाय न धोई॥

काह कहौं वह पियसों मोहिं सिर धरेसि अंगार।
तेहि के खिल भरोसें तू जीती मै हार॥
तोर अकेल का जीत्यों हारू। मैं जीता जग केर सिंगारू॥
बदन जित्यों जो ससि उजियारी। बेनी जित्यों भुवंगिनि कारी॥
औ मैं जीते मृगके नैना। कंठ जित्यों कोकिलके बैना॥
भौंह जित्यों अर्जुन धनुकारी। ग्रीव जित्यों तमचोर पुकारी॥
नासिक जित्यों पुहुप तिल सवा। सूक जित्यों बेसर होय उवा॥
दामिनी जित्यों दसन चमकाहीं। अधर रंग रबि जीत्यों साहीं॥
केहर जित्यों लंक मैं लीन्हीं। जित्यों मराल चाल बै दीन्ही॥

पुहुप बास मलयागिरि निरमल अंग बसाय।
नागिन मम आसा लुबुध मारेसि केहरको जाय॥
का तोहिं गरब सिंगार परायि। अबहीं लेह लोट सब ठायि॥
हौं सांवर सलोन मोर नैना। स्वेत चीर मुख चातक बैना॥

नासिक खरग फूल धुवतारा। भौंहें धनुष गगन काहारा॥
हीरा दसन खेत अरु स्यामा। छिपै बीज जो बिहंसे रामा॥
बिद्रुम रंग अधर रसराती। जो दामिनि अस रवि महं ताती॥
चाल गयंद गरब अति भरी। बिसा लंक नागेसर करी॥
सांवर जहां लवन सुठ नीकी। का सरवर तू करेसि जो फीकी॥

पुहुप बास हौं पवन अहारी कमल मोर निरहेल।
चहों केस धर नाऊं तोर मरन मोर खिल॥

पद्मावत सुनि उतर नहिं सही। नागमती नागिन जिम कही॥
वैं वह कहि वह वैं कहं कहा। काह कहां तस जाय न कहा॥
दोउ नवल भर जोवन गाजें। अपछर जानु अखारें बाजें॥
भा बाहुन बाहुन सो जोरा। हिय सो हिय कोइ बागन मोरा॥
कुच सों कुच भइ सौंहे अनी। नवहिं न नाथै टूटहिं तनी॥
कुंभस्थल दो गज मैमन्ता। दोनों उफर परे चौदन्ता॥
देव लोक देखत हुत ठाढ़े। लाग बान हिय जाहिं न काढ़े॥

जनहु दीन्ह ठग लाड़ देख आय तस मीच।
रहा न कोइ धरहरिया करै जो दोउमहं बीच॥

पवन स्रवन राजा के लागा। कहेसि लड़हिं पदमिन औ नागा॥
दोनों सौत स्याम औ गोरी। मरहिं तो कहं पावसि अस जोरी॥
चल राजा आवा तेहि बारी। जरत बुझाई दोनों नारी॥
एक बार जेहि पिउ मन बूझा। सो दूसर सों काहेक उझा॥
ऐस ग्यान मन जानन कोई। कबहुं रात कबहुं दिन होई॥

धूप छांह दोज इक रंगा। दोनों मिलि रहें इक संगा॥
जूझब छांड़हु बूझौ दोज। सेव करहु सेवाफल होज॥

गंग जमुन तुम नारि दोउ लिखी मुहम्मद जोग।
सेव करहु मिल दोनों तो मानहु सुख भोग॥

अस कहि दोनों नारि मनाई। बिहंसि दोउ तब कण्ठ लगाई॥
ले दोउ संग मंदिर महं आई। सोन पलंग तहं जाय बिछाई॥
सीझी पांच अमृत ज्योनारा। औ भोजन बावन परकारा॥
हुलसी सरस खचिचया खायें। भोग करत बिहंसी रहसायें॥
सोनमंदिर नग मति कहं दीन्हा। रूप मंदिर पदमावत लीन्हा॥
मन्दिर रतन रतनके खंभा। बैठा राज जोहारे सभा॥
सभा सो सबै सुम्न मन कहा। सोई अस गुरु जो भल कहा॥

बहु सुगन्ध बहु भोग सुख कुरलहिं केल कराहिं।
दोहु सो केल नितमानी रहस अनन्द दिन जाहिं॥

जाई नागमती नगसेनी। ऊंच भाग ऊंची दिन रैनी॥
कमलसेन पदमावत जाई। जानहु चन्द्र धरति महं आई॥
पण्डित बहु बुधमन्त बोलाये। राशि वरग औ गिरह गिनाये॥
कहेन बड़े दोउ राजा होहीं। ऐसे बूत दसे सब तोहीं॥
नवें खंडके राजा जाहीं। औ कुछ दण्ड होय दल माहीं॥
खुल भंडार कुछ दान दिवावा। दुखी सुखी कर नाल बढ़ावा॥
जाचक लोग गुनी जन आये। अरु आनंदके बजे बधाये॥

अति कुछ पावा जोतिषिन औ द चले असीस।
पुत्र कलत्र कुटुम्ब सब जीवहिं कोटि बरीस॥

राघव चेतन चेतन महा। आयउ रंक राजा जहं रहा॥
चित चिन्ता जानै बहु भेऊ। कवी ब्यास पण्डित सहदेऊ॥
बरनौ आय राज की कथा। पिंगल महं सब सिंहल मथा॥
जो कबि सुनै सीस सो धुना। सरवन नाद वेद आवि सुना॥
दीठि सो धरम पन्थ जेहि सूझा। ज्ञान को परम अर्थ मन बूझा॥
जोग जो रहै समाधि समाना। भोग जो गुनी कैर गुन जाना॥
बीर सुरिस मारे मन कहा। सोइ सिंगार कन्त जो चहा॥

वेद भेद जस बररुचो चितचिन्ता तस चेत।
राजा भोज चतुर दस भा चेतन सो हेत॥

घड़ी अचेत होय जो आई। चेतनकी सब चेत भुलाई॥
भादौं एक अमावस सोई। राजैं कहा दुइज कब होई॥
राघवं के मुख निकसा आजू। पंडितन कहा कालह बड़ राजू॥
राजैं दुहूं दिसा फिर देखा। पण्डित बावर कौन सरेखा॥
भुजा टेक कै पण्डित बोला। छांडहि देस बचन जो डोला॥
राघव करी जा धनी पूजा। चहै स्वभाव देखावे दूजा॥
तुहि ऊपर राघव बर खांचा। दुइज आज तो पण्डित सांचा॥

राघव पूज जाखनी दुइज देखायस सांझ।
वेदपन्थ जे नहिं चलहिं ते भूलहिं बन-मांझ॥

पण्डित कहा परा नहिं धोखा। कौन अगस्त समुद जेहि सोखा॥
सो दिन गहो सांझ भइ दूजी। देखी दुइज घड़ी वह पूजी॥
पंडितन रजा दीन्ह असीसा। अब कस ये कंचन औ सीसा॥
जो यह दुइज कालहकी होती। आज तेज देखत ससि जोती॥

राघव दौठि बन्द कल्ह खिला। सभा मांझ चेटक अस मेला॥
यहि कर गुरु चमारिन लोना। सिखा कामरू पाठत टौना॥
दुइज अमावसमहं जो देखावे। इन इक राहु चांद कहं लावे॥

अस गुनि नहिं वहि नृप सभा जेहि टौनाकर खोज।
यही छन्द ठगबिद्या चला सो राजा भोज॥

राघव बैन जो कंचन रेखा। कसे बान पीतर अस देखा॥
अज्ञा भई रिसान नरेसू। मारों काढ़ि निसारों देसू॥
झंठ बोल थिर रहै न राचा। पण्डित सोइ वेदमति सांचा॥
वेद वचन मुख सांच जो कहा। सो जुग जुग इस्थिर थिर रहा॥
खोट रतन सोई फटकिरा। केहि घर रतन जो दारिद हरा॥
चहै लच्छ बावर कवि सोई। जहं सरस्वती लच्छ कित होई॥
कविता संग दारिद मति भंगी। कांटै कुटिल पुहुप के संगी॥

कविता चेला विधि गुरु सीप सेवाती बुंद।
तेहि मानुष की आस का जो मरजिया समुंद॥

यहि सो बात पद्मावत सुनी। देस निसारा राघव गुनी॥
ज्ञान दौठि धन अगम विचारा। भल न कीन्ह अस गुनीनिसारा॥
जे जाखनी पूज ससि काढ़ी। सुरज की ठांव करे पुनि ठाढ़ी॥
कब की जीभ सरग हरवानी। इक दिस आग दुसर दिस पानी॥
जनु जुगजत सुख काढ़े भोरे। जस बहुतें अपजस ह्वै थोरे॥
रानी राघव बेग हंकारा। सूरज गढ़तरि लेहु उतारा॥
ब्राह्मण जहां दच्छिना पावा। सरग जाय जो होय बोलावा॥

आवा राघव चेतन धौराहर के पास।
ऐसि न जानी तेहि हिरदै बिजुरी बसै अकास॥

पदमावत जो झरोखे आई। नेहि कलङ्क जस ससि दिखराई॥
ततखन राघव दीन्ह असीसा। भयो चकोर चन्दमुख दीसा॥
पहिरे ससि नखतनकी मारा। धरती सरग भयो उजियारा॥
औ पहिरे कर कंकन जोरी। नग जो लाग तिहि तीस करोरी॥
कङ्कन एक काढ़ दे डारी। काढ़त भार टूट गयें हारी॥
जानहुं चांद टूट ले तारा। छूट्यो सरग कालकर धारा॥
जनहु टूट बिजुरी भुइं परी। उठा चौंध राघव चित हरी॥

परा आइ भुइं कङ्कन जगत भयो उजियार।
राघव बिजुली मारा बेसंभर कुछ न संभार॥

पदमावत हंस दीन्ह झरोखा। अब जो गुनी मरै मुहिं दोखा॥
सबै सहेलीं देखी धाईं। चेतन चेत जगावैं आईं॥
चेतन परा न आवै चेतू। सबहिं कहा यहि लाग परेतू॥
कोइ कहि कांप कोई सम्पातू। कोई कहि यहि मिरगा की बातू॥
कोइ कहि लाग पवन कर झोला। कैसहिं समुझ न चेतन बोला॥
पुनि उठाय बैठारो छाहां। पूंछहि कौन पीर जिय माहां॥
धौं काहू के दरसन हरा। कै ठग धूत भूत जेहि हरा॥

कै तोहि काहू दीन्ह कुछ कै रे डसा तोहि सांप।
कहो सो चित होय चेतन देह तोर कस कांप॥

भयो सो चित चेतन जब चेता। नयन झरोखें जीव सकेता॥
पुनि जो बोला मौत बुधि खोवा। नयन झरोखा लायें रोवा॥

बावर फेर सीस पै धुना। आपन कहि न पराई सुना॥
जानहु लाई काहुं ठगोरी। खन पुकार खन बांध बोरी॥
बौरे ठगा यहि चितौर माहां। कासो कहों जाउं केहि पाहां॥
यहि राजा सठ बड़ हत्यारा। जें राखा यहि ठग बटपारा॥
ना कोइ बरजन लाग गुहारी। अस यहि नगर होय बटपारी॥

दीठि रह्यौ ठग लाड़ू अलक फांस पर ग्रीव।
जहां भिखारि न बाचै तहां बचै को जीव॥

कित धौराहर आय झरोखें। लै गयी जिव दछिनाके धोखें॥
सरग सूर ससि करैं अजोरी। तेहि ते अधिक देउं केहि जोरी॥
ससि सूरहि जो होत वह जोती। दिन पहाड़ हत रयनिनहोती
तें हंकार मोहिं कछुन दीन्हा। दीठि जो पड़ी जीव हर लीन्हा
नयन भिखार डीठ सत-छुड़ी। लागी तहां बान हिय गड़ी॥
नयनहिं नयन जो बेध समाने। सीस धुनहिं निसरे नहिं ताने॥
नथहिं न भाधी निलज भिखारी। तबहुं धुरी लाग सुखगारी॥

कित करमुखी नयन भै जीव हरा तेहि बाट।
सरवर नीर बिछोइ ज्यों तरक तरक हिय फाट॥

अखि न काहा चेतन वे संभारा। हिये चेत जिब जाय न मारा॥
जो कोइ पावै आपन मांगा। ना कोइ मरै न काहूं खांगा॥
वह पदमावत ऐस सरूपा। बरन न जाय काहके रूपा॥
जें चीन्हौं सो गुगत चल गयऊ परगट गुपत जीव बिन भयऊ॥
तुम अस बहुत बिमोहित भयी। धुन धुन सीस जीव दे गयी॥

बहुतहिं दीन्ह नाय के ग्रीवा। उतर न देइ मार कै जीवा॥
तुइं पुनि मरत होय जर भुई। अबहिं उघेल कानकी सुई॥
कोइ मांग मार ना पावै कोइ बिन मांगा पाव।
तू चेतन औरहि समभावे बहु तुहिं को समभाव॥
भयो चेत चित चेतन चेता। बहुर न आय सहों दुख एता॥
रोवत आय परे हम जहां। रोवत चले कौन सुख तहां॥
जहवां बहु आसु जियकेरा। कौन रहन पर चलों सवेरा॥
अब यहि भीख तहां होय मांगों। एतना दे जग जनम न खांगों
औ अस कंकन जो पाऊं दूजा। दारिद हरे आस मन पूजा॥
देहिली नगर आव तुरकानू। साह अलाउद्दीन सुलतानू॥
सोन जरो जेहि की टकसारा। बारह बानी परहिं दिनारा॥
कमल वखानों जाय तहं जहं अलि अलाउद्दीन।
सुनि के चढ़े भानु होय रतन होय जल मीन॥

राघव चेतनका देहिली गवन।

राघव चेतन कीन्ह पयाना। देहिली नगर जाय नियराना॥
आय साहकी द्वार जो पहुंचा। देखा राज जगतपर ऊंचा॥
छत्तिस लाख तुरुक असवारा। तीस सहस हस्ती दरबारा॥
जहं तक तपे जगतपर भानू। तहं लग राज करे सुलतानू॥
चहुं खण्ड के राजा आवहिं। ठाढ़ झुराहिं जुहार न पावहिं॥

ममतेवान कै राघव भूरा। नाहिं उवार जिया डर पूरा॥
जहां भुरान दिये सिर छाता। तहं हमार को चालै बाता॥

वार पार नहिं सूझै लाखन उमर अमीर।

अब खुर खेह जाव मिल आय परे यहि भीर॥

बादशाह सब जाना बूझा। सरग पतार हिये में सूझा॥
जो राजा अस सजग न होई। काकर राज कहांकर कोई॥
जगत-भार वह एक संभारा। तौ थिर रहै सकल संसारा॥
औ अस वहिक सिंहासन ऊंचा। सब काहूंपर दीठि जो पहुंचा॥
सब दिन राजकाज सुख भोगौ। रात फिरै घरघर ह्वै जोगौ॥
राव रंक जहंतक सब जाती। सबकी चाह लेइ दिन राती॥
पंथी परदेसी जब आवहिं। सबकी चाह दूत पहुंचावहिं॥

यह बात तहं पहुंची सदा छत्र सुख छाथ।

ब्राह्मन एक द्वार है ठाढ़ा कंकन जड़ाउ हाथ॥

मया साह मन सुनत भिखारी। परदेसी कहं पूंछ हंकारी॥
हम पुनि जाना है परदेसा। कौन पन्थ गवनव केहि भेसा॥
देहिली राज चिन्त मन काढ़ी। यहि जग जैसि दूधकी साढ़ी॥
सैंत मिलाय छांछ के फेरा। मथ घिव लीन्ह महिउ कहं केरा॥
यहि देहिली कित है ह्वै गये। कै कै गरब खेह मिल गये॥
यहि देहिली को रही ढिलाई। साढ़ी काढ़ ढील जब ताई॥
रावन लंक जार सब तापा। रहा न जोवन औ तरुनापा॥

भीख भिखारी दीजिये का ब्राह्मन का भाट।

अग्या भई बोलावहु अरती धरा लखाट॥

राघव चेतन हुत जो निरासा। ततखन वेग बोलावा पासा॥
सीस नायके दीन्ह असीसा। चमकत नग कंकन कर दीसा॥
आज्ञा भई सो राघव पाहां। तुइ मंगन कंगन का बाहां॥
राघव फेर सीस भुइं धरा। जुग जुग राज भानु कौ करा॥
पदमिनि सिंहलदीपकी रानी। रतनसेन चितौर गढ़ आनी॥
कमल न सर पूजी तेहि बासा। रूप न पूजी चन्द अकासा॥
जहां कमल ससि सूर न पूजा। केहि सर देउं और को दूजा॥

सो रानी संसार मन दछना कंकन दीन्ह।
अपछर रूप दिखायके जीव भरीके लीन्ह॥

सुनिके उतर साह मन हंसा। जानहु बीज चमक परगसा॥
कांच जोग जो कंचन पावा। मंगन ताहि सुमेरु चढ़ावा॥
भाउं भिखार जीभ मुख बांची। अबहिं संभार बातु कहु सांची॥
कहं अस नारि जगत उपराहीं। जेहिके सरि सूरज ससि नाहीं॥
जो पदमिनि तुइं मंदिर मोरे। सातों दीप जहां कर जोरे॥
सप्त दीपमहं चुन चुन आनी। सो मोरे सोरह से रानी॥
जो उन महं देखिसि इक दासी। देख लोन है लोन बिलासी॥

चहूं खंड हौं चक्कवै जस रवि तपै अकास।
जो पदमिनि मोरे मंदिर अपछर तौ कैलास॥

तुम बड़ राज छत्रपति भारी। अन ब्राह्मनहौं अहौं भिखारी॥
बारहूं खंड भीखका बाजा। उदय अस्त तुम्ह ऐस न राजा॥
धरमराज औ सत कुल माहां। झूंठ जो कही जीभ गहि बाहां॥
कुछ जो चार सब कुछ उपराहीं। औ यहि चहुं दीपमहं नाहीं

पदमिनि अमिरत हंस अदूरू। सिंहलदीप भलहिं सो मूरू॥
सातों दीप देख हौं आवा। तब राघव चेतन कहवावा॥
अन्ना होय न राखों धोखा। कहों सो सब नारिन गुन दोखा॥

यहां हस्तिनी सिंहिनी औ चित्रनि वनवास।
कहों पदमिनी पद्म सिर भंवर फिरे चहुंपास॥

स्त्रीवर्णन।

पहिले कहों हस्तिनी नारी। हस्ती की परकीरति सारी॥
सिर औ पांय सुभ्र गयें छोटी। उरकी खीन लंककी मोटी॥
कुम्भस्थल गज अमित अमाहीं। गवन गयन्द ढाल जनु बाहीं॥
दीठि न आवै आपन पीऊ। पुरुष पराये ऊपर जीऊ॥
भोजन बहुत बहुत रति चाऊ। अछवाई सो थोर सुभाऊ॥
मधु जस मन्द वसाय पसेऊ। औ विस्वास धरे जस देऊ॥
डर औ लाज न एको हियी। रहै जो राखें आंकुस दियी॥

गजगति चलेचहूंदिस लाय जगतकहं चीख।
कही हस्तिनी नारी यै सब हस्तिनिके दोख॥

दूसर कहों सिंहिनी नारी। करै बहुत बल अलप अहारी॥
उर अति सुभ्र खीन अति लंका। गरब भरी मन धरे न संका॥
बहुत रोष चाहो पिय हना। आगें घालन काहूं गिना॥
अलंकार अपनी वह भावा। देख न सकी सिंगार परावा॥

सिंहकी चाल चलै डर-डीली। रोवां बहुत जांघ औ फीली॥
मोट मांस रुचि भोजन तासू। औ मुख आव विषायंध बासू॥
डीठि तराहीं हेरै आगी। जन मथवाह रहै सिर लागी॥

सेजवां मिलत सो स्वामी लावे उर नख बान।
यहि गुन सबै सिंहकी वह सिंहनि सुलतान॥

तीसर कहूं चित्रनी नारी। महाचतुर रस प्रेम पियारी॥
रूप स्वरूप सिंगार संवाई। अपछर जैसि रही पछवाई।
रोष न जानै हंसता-सुखी। जहं अस नारि कन्त सो सुखी॥
अपने पुरुष की जानै पूजा। एकपुरुष कै जान न दूजा॥
चन्द्रबदन रंग कुमुदिनि गोरी। चाल सुहाय हंस की जोरी॥
खीर खांड़ कुछ अलप अहारू। पान फूलसे बहुत पियारू॥
पद्मिनि चाह घाट दुइ करा। और सबै वह गुन निरमरा॥

चित्रिनि जैस कुमुद रंग और.बासना अंग।
पद्मिनि बास चंदन जस भंवर फिरहिं तेहि संग॥

चौथे कहौं पदमिनी नारी। पद्म-गन्ध ससि दई संवारी॥
पद्मिनि जात पद्मरंग ओई। पदमबास मधुकर संग होई॥
ना सुठ लांबी ना सुठ छोटी। ना सुठ पातर ना सुठ मोटी॥
सोरहौं करन रंग है बनी। सो सुलतान पदमिनी गुनी॥
दीरघ चारु चार लघु सोई। सुभ्र चार चहुं खीनो होई॥
औ ससि-बदन देख सब मोहा। चाल मराल चलत गत सोहा॥
खीर अहार न कर सुकवारा। पान फूलके रहै अधारा॥

सोरह किरन मम बूरन औ सोरहों सिंगार।
अब यह भांति बरनकै जस बरनै संसार॥

प्रथम केस दीरघ सिर सोहें। औ दीरघ अंगुरी कर सोह॥
दीरघ नयन तीख तहं देखा। दीरघ ग्रीव कण्ठ वय रेखा॥
पुनि लघु दसन होहिं जनु हीरा। औ लघुकुच उतंग जंभीरा॥
लघइ ललाट दुइज परकासू। औ नाभी लघ चंदन बासू॥
नासिक खीन खरगको धारा। खीन लंक जनु केहरि हारा॥
खीन पेट जानहु नहिं आंता। खीन अधर विद्रुम रंग राता॥
सुभ्र कपोल देख सुख सोभा। सुभ्र नितम्ब देख मन लोभा॥

सुभ्र कलाई अति बनी सुभ्र जंघ गज चाल।
सोरह सिंगार बरनकै करहिं देवता लाल॥

यहि पद्मिनि चितौर जो आनी। कुंदन काया द्वादस बानी॥
कुंदन कनक ताहि नहिं बासा। वह सुगन्ध जस कमल बिकासा॥
कुंदन कनक कठोर सो अङ्गा। वह कोमल रंग पुहुप सुरङ्गा॥
वह छुइ पवन बिरछ जेहिलागा। सोइ मलयगिरि भयो सुभागा
काह न मूंठ भरी वह देही। अस मूरति केहि दई उरेही॥
सबै पठितर चित्र के हारौं। वहिक रूप कोइ लखी न पारौं॥
कया कपूर हाड़ सब मोती। तेहि ते अधिक दीन्ह बिधि ज्योती

सूरज-किरन जस निरमल तेहिते अधिक सरीर।
सौंह दीठि नहिं जायकर नयनहिं आवै नीर॥

ससि मुख जबहिं कहै कुछ बाता। उठत तंव सूरज जस राता॥
दसन दसन सो किरनी फूटहिं। सब जग जानि फुल झरी छुटहिं

जानहुं ससि महं बीज दिखावा। चौंध परयो कुछ कहि न आवा॥
कौंधत रहि जस भादौं रैनी। स्याम रयनि जनु चल उड़ैनी॥
जनु बसन्त ऋतु कोकिल बोली। सरस सुनाय मारसर डोली॥
जनु अमृत है वचन विकासा। कमल जो वास वास धन वासा॥
यहि सर सौंध जो नाग बिहरा। जाय संख वैनी है परा॥

सबै मनोहर जाय मर जो देखै तस चार।
पहिलि सो दुख बरनकै बरनो बहिक सिंगार॥

कित हौं रहा कालकर काढ़ा। जाय धौरहर तर भा ठाढ़ा॥
कित वह आय झरोखे झांकी। नयन कुरंगिनि चितवन बांकी॥
बिहंसी ससि तरई जनु परीं। कैसो रयनि छूटि फुलझरीं॥
चमक बीज जस भादौं रैनी। जगत दीठि भर रही उड़ैनी॥
काम कटाच्छ दीठि बिष बसा। नागिन अलक पलकमहं डसा॥
भौंह धनुष पल काजल बूड़ी। वह भइ धानुक हौं भइ जड़ी॥
मार चली मारतहूं हंसा। पाछे नाग रहा हौं डसा॥

काल वाल पीछे रखा गरुड़ न मन्तर कोय।
मोर पीठ वह बैठा कासों पुकारों रोय॥

वेनी छोर झोर जो कैसा। रयनि होय जग दीपक लैसा॥
सिरहत बिषहर परि भुइं वारा। सगरे देस भयो अंधियारा॥
सकपकाहिं बिषभरे पसारे। लहरहिं भर लहकहिं अतिकारे॥
जानहुं लोटहिं चढ़े भुअंगा। वेधी बास मलयगिरि अंगा॥
लरहिं मुरहिं जनु मानहिं केली। नाग चढ़े मालतिकी बली॥

लहरें देइ जनहुं कालिन्दी। फिर फिर भंवर भयी चित बन्दी॥
चंवर धरत आछी चहुं पासा। भंवर न उड़हिं जो लुबधे बासा॥

होय अंधेर घन बिजु चमक जबहिं चीर गहि झांप।
केस नाग कित देख मैं संवरि संवरि जिय कांप॥

मांग कनक जो सेंदुर रेखा। जन बसन्त राता जग देखा॥
गइ पद्मावल पाटी पारी। औ रचि चित्र विचित्र संवारी॥
भई उरेह पुहुप सब नामा। जनु बक बिखर रहे घन स्यामा॥
जमुना मांझ सरस्वती मांगा। दुहुं दिस दिये तरंग न गांगा॥
सेंदुर रेख सो ऊपर राती। वीर-बहूटिन की जस पांती॥
बलि देवता भयी देख सेंदूरू। पूजी मांग भोर उठ सूरू॥
भोर सांझ रवि होय जो राता। वही देख राता भा गाता॥

वेनीकारी पुहुपते निकसी जमुना आय।
पूज इंद्र आनन्द सों सेंदुर सीस चढ़ाय॥

दुइज ललाट अधिक मनकरा। संकर देख माथ भुइं धरा॥
यहि नित दुइज जगत महं दीसा। जगत जो हारे देइ असीसा॥
ससि जो होय नहिं सरवर छाजे। होय सो अमावस छिप मनलाजे॥
तिलक संवारि जो चंदन रचे। दुइज मांझ जानहुं कच बचे॥
ससिपर करवट सारा राहू। नखतहिं भरा दीन्ह परदाहू॥
पारस जोति ललाटहिं ओती। दीठि जो करे होय तेहिं जोती॥
श्री जो रतन मांग बैठारा। जानहु गगन टूट निस तारा॥

ससि औ सूर जो निरमल तेहिको ललाटको रूप।
निस दिन चलहिं न सरवर पावें तप तप होंहि अनूप॥

भौंहैं धनुष स्याम जनु चढ़ा। पनच करै मानुष कहँ गढ़ा॥
चन्द कि मूठ धनुष वह ताना। जाकर बीज बरुनि बिष बाना॥
जा सों हेर जाय सो मारी। गिरिवर टरहिं सो भौंहहिं टारी॥
सेतबन्ध जो धनुष बिडारा। वह धनुष भौंहहिं सो हारा॥
हारा धनुष जो बेधा राहू। और धनुष कोइ गिने न काहू॥
कित सो धनुष भौंह में देखा। लागवान तित आव न लेखा॥
तित बानहिं झांझर भा हिया। जो अस मार सो कैस जिया॥

सोत सोत तन बेधा रोम रोम सब देह।
नस नस महं भइ सालहि हाड़ हाड़ भयी बेह॥

नयन चित्र वे रूप चितेरे। कमल पत्र पर मधुकर फेरे॥
समुद तरंग उलटहिं जन राते। डोलहिं औ घलहिं मदमाते॥
सरद चन्द महं खंजन जोरी। फिर फिर लरहिं अछोर बहोरी॥
चपल बिलोल डोल वह लागी। थिर न रहहिं चंचल बैरागी॥
निरख अघाहिं न हत्या हते। फिर फिर स्रवनहिं लागी मते॥
अंग स्वेत मुख स्याम सो ओहीं। तिरछ चलहिं खन सूध न होहीं॥
सुर नर गन्ध्रव लाल कराहीं। उलटि चलहिं सरग कहं जाहीं॥

अस वै नयन चक्र दुइ भंवर समुद्रउल थाहिं।
जनु जिव घालहिं डोली ले आवहिं ले जाहिं॥

नासिक खड़ग हरी धन कीरू। जोग सिंगार जिता औ बीरू॥
ससि-मुख सौंह खड़ग गहि रामा। रावन सो चाहै संग्रामा॥
दुहं समुदमहं जनु रचि बीरू। सेतबन्ध बांधा नल नीरू॥
तिलक फूल अस नासिक तासू। औ सुगन्ध होन्हीं बिबि बासू॥

करन फूल फेरैं उजियारा। जनहु सरद ससि सो ह्विलतारा॥
सोहिल चाह फूल वह ऊंचा। धावहिं नखत न जाई पहूंचा॥
न जनो कैस फूल वह गढ़ा। बिकस फूल सब चाहहिं चढ़ा॥

अस वह फूल बासका आगर भा नासिका समुन्द।
जेति फूल वह फूलहिं ते सब भयी सुगन्द॥

अधर सुरंग पान अस खीनी। राती सुरंग अमीरस भीनी॥
आछहि बिहंसत बोल सो राती। जनु गुलाल देखे बिहंसाती॥
मानिक अधर दसन जनु हीरा। बैन रिसाल खांड़ मुखसीरा॥
काढ़ी अधर डाभसों चीरी। रुधिर चुवै जो खावै बीरी॥
ढारे दसन रसहिं रस कौलो। रकत भरी बहु सुरंग रंगोली॥
जनु परभात राति रवि रेखा। बिकसे बदन कमल जनु देखा॥
अलक भुअङ्गिन अधरहिं राखा। गहै जो नागिन सो रस चाखा॥

अधर अधर रस प्रेमका अलक भुअंगिन बीच।
तब अमिरत रस पावै जब नागिन कहं खीच॥

दसन स्याम पानहिं रंग पाके। बिकसन कमल फूल अति ताके॥
ऐसि चमक मुख भीतर होई। जनु दाड़िम औ स्याम न कोई॥
चकमहिं दसन बिहंस जो नारी। बीज चमक जस निस अंधियारी
स्वेत स्याम अस चमकत दीठी। स्याम हीरदहूं पांयत बैठी॥
कैं सो गढ़ी अस दसन अमोला। मारै बीज बिहंस जो बोला॥
रतन भीज रंग भवि भइ स्यामा। ओही छात पदारथ नामा॥
क्रितवे दसन देख रंग भीने। ले गइ जोति नयन भयी खीने॥

दसन ज्योति है नयन मग हिरदै मांझ सो पैठ।
परगट जग अंधियार जनु गुप्त वहीमें दीठ॥
रसना सुनहि जो कहि रस बाता। कोकिल बैन सुनत मन राता
अमिरत कोप जीभ जनु लाई। पान फूल अस बात बेहाई॥
चातृक बैन सुनत हो सांती। सुनै सो परै प्रेम मधुमाती॥
बिरवा सूख पाव जस नीरू। सुनत बैन तस पलहि सरीरू॥
बोल सेवास-बुन्द जनु परहीं। स्रवन सीप सुख मोती भरहीं॥
धन वै बैन जो प्रान अधारू। भूंखि स्रवनहिं दीन्ह अहारू॥
उन्ह बैनहिं की काहि न आसा। मोहहिं मिरग बिहंस तेहि संसा

कंठ सारदा मोही जीभ सरस्वती काहि।
इंद्र चांद रवि देवता सबै जगत सुख चाहि॥
स्रवन सुनहि जो कुन्दन सीपी। पहिरे कुंडल सिंहलदीपी॥
चांद सुरज दुहूं दिस चमकाहीं। नखतहि भरी निरख नहिंजाहीं
खनखन करहिं बीज अस कांपी। अमर मेघ महं रहहिं न झांपी
सूक सनीचर दुहूं दिस मतें। होहिं निरार न स्रवनहिं छूतें॥
कांपत रहहिं बोल जो बयना। स्रवनहि जनु लागहिं फिरनयना
जो जो बात सखिन सो सुना। दुहूं दिस करहिं सीस वै धुना॥
खट दोउ धुव तरईं खूटी। जानहु परहिं कचपची टूटी॥

वेद पुरान ग्रंथ जित सबै सुनै सिख लीन्ह।
नाद बिनोद राग रस बंदक स्रवन वही बिधि दीन्ह॥
कमल कपोल वही अस छाजे। औरन काहि दई अस साजे॥
पुहुप पंग रस अमी संवारी। सुरंग गेंद नारंग रतनारी॥

पुनि कपोल बायें तिल परा। सो तिल बिरह चिनग कै करा॥
जो तिल देख जाय जर सोई। बायें दीठि काह जन होई॥
जानहुं भंवर पद्मपर टूटा। जीव दीन्ह औ वहौं न छूटा॥
देखत तिल नयनहिं गा काढ़े। और न सूझै सो तिल छांढ़े॥
तेहिपर अलक मंजरी डोला। छुवै सो नागिन सुरंग कपोला॥

रच्छा करै मयूर वह नागिन हिय पर लोट।
केहिरे जग कोउ छुइ सकै दुइ परवत की ओट॥

ग्रीव मयूरकेर जस ठाढ़ो। कोड़े फेर कड़ेरै काढ़ो॥
धनि वह ग्रीव का वरनी करा। बांक तुरंग जान गहि धरा॥
घरन परेवा ग्रीव उठावा। चहि बोल तमचोर सुनावा॥
ग्रीव सुराहीकै अस भयी। अमी पियाला कारन नयी॥
पुनि तेहि ठांव परी त्रयरेखा। तेहि सो ठांउ होय जो देखा॥
कनक तार सोने की करा। साज कमल तेहि ऊपर धरा॥
सुरज किरन हत ग्रीव निरमली। देइ पीग जाई हिय चली॥

नागिन चढ़ी कमल पर चढ़के वैठ कमंठ।
कर पसार जो काल कहं सो लागै वह कंठ॥

कनकदंड दुइ बनो कलाई। डांड़ी फेर कमल जनु लाई॥
चंदन गाभको भुजा संवारी। जन सो वेल कमल पौनारी॥
तेहि डांड़ी संग कमल हतोरी। एक कमलको दोनों जोरी॥
सहजहिं जानहुं मेंहिदी रची। मुक्ताहल लीन्हे घूंघुची॥
करपल्लव जो हथोरिन साथा। वै सब रकत भरीं तेहिं हाथा॥

देखत हिया काढ़ जिव लेई। हिया काढ़ के जान न देई॥
कनक अंगूठी औ नग-जरी। वह हत्यारिन नखतहिं भरी॥

जैसी भुजा कलाई तेहि विधि जाय न भाख।
कंचन हाथ होय जेहि तेहि दरपन का साख॥

हिया थार कुच कनक कचूरा। जानहुं दोउ श्रीफल जूरा॥
एक पाट वे दोनों राजा। स्याम छत्र दूनहुं सिर छाजा॥
जानहु दुइ लट्टू इक साथा। जग भा लट्टू चढ़े न हाथा॥
पातर पेट आही जनु पूरी। पान अधार फूल अस गोरी॥
रोमावलि तेहि ऊपर झूमा। जानहुं दोउ साम औ रूमा॥
अलक भुअंगिन तेहि पर लोटा। हिय कर एक खेल दुइ गोटा॥
बान पुकार उठे कुच दोऊ। नाग सरन वह पावन कोऊ॥

कैसहिं नवहिं न नारि जीवन गरब उठान।
जो पहिले कर लावै सो पावै रत मान॥

भृंग लंक जनु मांझन लागा। दुइ खंड नलिन मांझ जनु तागा॥
जब फिर चले देख वह पाछे। अपछर इंद्र केर जनु काछे॥
जोह चले मन भा पछताऊ। अबहूं दीठि लाग वह भाऊ॥
वही गवन छिप अपछर गईं। भईं अलोप ना परगट भईं॥
हंस लजाय समुदकहं खेलो। हथी लाज धूर सिर मेलो॥
जगतमें दूखी देखि महूं। उदय अस्त नारी ना कहूं॥
महि मंडल तौ ऐस न कोई। ब्रह्ममंडल जो होय तो होई॥

बरनों नारि जहां लग दीठि झरोखें आय।
और जो अहे अदृष्ट धन सो मोहिं बरनि न जाय॥

का धन कहों जैसो सुकुमारा। फूलकी छुवे होय विकरारा ॥
पखुरी काढ़ें फूलन सेती। सोई डासी सोर सपेती ॥
फूल समूचा रहै जो पावा। व्याकुल होय नींद नहिं आवा ॥
सहै न खीर खांड़ औ घीऊ। पान अधार रहै तन जीऊ ॥
नस पाननकी काढ़े हेरी। अधरन गड़े फांस वेह केरी ॥
मकरिक तार ताहि कर चीरू। सोपहिरे जर जाय सरीरू ॥
पालंग पांव कि आछे पाटा। नेत बिछाय चले जो बाटा ॥

कहा नयन जो राखों पलक न लाऊं ओट।
प्रेमक लुबधा पावै काहि सो बड़का छोट ॥

जो राघव धन वरन सुनाई। सुना साह मुरछा गत आई ॥
जनु मूरति वह परगट भई। दरस दिखाय ताहि छिप गई ॥
जो जो मंदिर पदमिनी लेखि। सुना सो कमल कुमुद जो देखि ॥
होय मालती धन चित पैठी। और पुहुप कोई आव न दीठी ॥
मन होय भंवर भयो वैरागा। कमल छांड़ चित और न लागा ॥
चांदकि रंग सुरज जस राता। और नखत सो पूंछ न बाता ॥
तब कलि अलादीन जग-सूरू। लेउं नारि चितौर की चूरू ॥

जो वह मालति मानसर अलि न मलीन्हों जात ॥
चितौर महं जो पदमिनी फेर वही कछु बात।

जगसूर कहं तुम पाहां। और पांचनग चित्तौर माहां ॥
एक हंस है पंख अमोला। मोती चुनै पदारथ बोला ॥
दुसर नग जो अमिरत बसा। सब विष हरै जहां लग डसा ॥
तीसर पाहन परस बखाना। लोह छुवै होय कंचन वाना ॥

चौथ चढ़े सांकुर अहेरी। जेहि बस हस्ति धर सब घरी॥
पांचों है सो तहां लागना। राज पंख पंखी गरजना॥
हरनि रोझ कोइ बाच न भागा। जैस सचान तैस उड़ भागा॥

नग अमोल अस पांचों मान समुद वह दीन्ह।
इस कंदर नहिं पाई जो रे समुद धस लीन्ह॥

पान दीन्ह राघव पहिरावा। दस गज मस्त घोर सो पावा॥
अरु दूसरि कंकनकी जोरी। रतन जो लाग वह तीस करोरी॥
लाख दिनार दिवाई जेंवा। दारिद हरा समुदको सेंवा॥
हौं जेहि दिवस पदमिनी पाऊं। तोहि राघव चितौर बैठाऊं॥
पहिले कर पांचों नग मूठी। सो नग लेउं जो कनक अंगूठी॥
सुरजा बीर पुरुष बरयारू। नाजन नाग सिंह असवारू॥
दीन्ह पत्र लिख बेग चलावा। चित्तौर गढ़ राजा पहं आवा॥

राजैं पत्र वंचावा किरपा लिखी अनेग।
सिंहलकी जो पदमिनी पठै देव तेहि बेग॥

राज और बादसाहकी लड़ाई।

सुन अस लिखा उठा जर राजा। जौं नो दैव तड़प घन गाजा॥
का मोहिं सिंह दिखावस आई। कहौं तो सारदूल धर खाई॥
भलहिं जो साह भूमिपति भारी। मांग न कोउ पुरुषकी नारी॥
जो सो चकवे ताकहं राज। मन्दिर एक अबन कहं साज॥

अपछर जहां इंद्र पै आवै। और जो सुनै न देखै पावै॥
कंसका राज जिता जो गोपै। कान्ह न दीन्ह काहुंकहं गोपी॥
को मोहिं ते अस सूर अगारा। चढ़ै सरग धुस परै पतारा॥

का तोहि जीव मराऊं सकत आनका दोस।
जो तस बुझै न समुद-जल सो बुझाय कित ओस॥

राजा अस न होहु रिस-राता। सुनहु न जूड़ न जर कहु बाता॥
मैं हौं यहां मरै कहं आवा। बादशाह अस जान पठावा॥
जो तोहि भार न औरहि लीन्हा। पुनि सो काल उतर बहि दीन्हा
बादसाह कहं ऐस न बोलू। चढ़ै तौ परै जगत महं डोलू॥
सूरहि चढ़त लाग दहिं बारा। दहक आग तेहि सरग पतारा॥
परवत उड़हिं सूरकै फूकें। यहि गढ़ छार होय इक झोकें॥
धसै सुमेर समुद गा पाटा। भूमी डोल सेष फन फाटा॥

तासों कौन लड़ाई बैठ न चितौर खास।
ऊपर लेहु चंदेरी का पद्मिन इक दास॥

जो पै घरनि जाय घर केरी। का चितौर का राज चंदेरी॥
जेइ लेई घर-कारन कोई। सो घर देई जो जोगी होई॥
हौं रनथंभोर नाथ हमीरू। कलप माथ जे दीन्ह सरीरू॥
हौं सो रतनसेन सक बन्धी। राहु वेध जीते सर बन्धी॥
हनुमत सरस भार जें कांधा। राघव सम समुद्र जे बांधा॥
बिक्रम सरस कीन्ह जें साका। सिंहलदीप लीन्ह जो ताका॥
जो अस लिखा भयौ नहिं धोका। जियत सिंहकी गहिको मोछा